

पेदापह्ली, 23 अक्टूबर (शुभ लाभ व्यूरो)।

पुलिस शहीद स्मरण सप्ताह के अवसर पर रामगुंडम पुलिस कमिश्नरेट कार्यालय में शुक्रवार को पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। पुलिस कमिश्नर के निदेश पर अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (प्रशासन) के. श्रीनिवास के पर्यवेक्षण में तथा सीसीआरबी इंस्पेक्टर गोपी की देखरेख में आयोजित इस प्रतियोगिता का उद्देश्य पुलिसकर्मियों में व्यावसायिक दक्षता, सामाजिक जिम्मेदारी और जनहितैषी पुलिसिंग की भावना को बढ़ावा देना था।

प्रतियोगिता दो श्रेणियों में हुई। पुलिस कॉन्स्टेबल से सहायक उपनिरीक्षक तक के कर्मचारियों को लोकतांत्रिक व्यवस्था में पुलिस से जनता की अपेक्षाओं तथा पुलिस अधिकारियों के जीवन में सोशल मिडिया की भूमिका जैसे विषय दिए गए। वहीं, उपनिरीक्षक और उससे ऊपर के अधिकारियों ने नागरिकों का सम्मान एवं विश्वास हासिल करने तथा जमीनी स्तर पर पुलिस व्यवस्था मजबूत करने जैसे विषयों पर निबंध लिखे। प्रतिभागियों को तेलुगु या अंग्रेजी में लिखने का विकल्प दिया गया। अधिकारियों ने कहा कि ऐसे आयोजन पुलिसकर्मियों में जवाबदेही, जनसेवा और पेशेवर प्रतिबद्धता को मजबूत करते हैं।

मन शांत होने पर सफल होता है ध्यान



जागरण संवाददाता, ऋषिकेश। विख्यात संत आचार्य सुधांशु महाराज ने कहा कि मनुष्य जीवन में निराशा, दुःख और अवसाद का प्रभावशाली समाधान ध्यान साधना है, मन के शांत होने पर ही ध्यान सफल होता है। परमार्थ निकेतन में विश्व

जागृति मिशन के तत्वावधान में आयोजित ध्यान एवं श्री साधना शिविर का उद्घाटन करते हुए मिशन के संस्थापक आचार्य सुधांशु महाराज ने कहा कि जीवन में मनुष्य को अनुशासन लाना चाहिए नियम बनाने चाहिए आचार विचार और स्वभाव में सुधार से मन शांति की

ओर बढ़ेगा। जीवन एक उत्सव है इसे उत्सव के रूप में जी कर समय का सदुपयोग करना चाहिए। महात्मा गांधी के आदर्श इस बात के उदाहरण हैं। सुधांशु महाराज ने कहा कि माथे पर शीतलता, चेहरे पर प्रसन्नता, वाणी में मधुरता, अंगों में स्फूर्ति का भाव मनुष्य जीवन का शृंगार है। उन्होंने साधकों को प्राणायाम की क्रियाएं सिखाईं। ओंकार ध्वनि को ध्यान का प्रथम चरण बताया। योग गुरु डा. अर्चिका दीदी ने कहा कि अपनी चेतना का परम चेतना से जोड़ना ही ध्यान है। अपनी चेतना को परम को सौंप दे परमेश्वर की ओर चलकर ही आनंद प्रेम और सुरक्षा प्राप्त होती है। इस अवसर पर विश्व जागृति मिशन प्रकाशन विभाग के संपादक डा. नागेंद्र मदान आदि उपस्थित थे।

कहते हैं, जो काल भैरव की शरण में जाता, वह शिव के परमधाम कैलाश पर प्रस्थान करता है

श्री काल भैरवाष्टमी का व्रत मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी के दिन मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 3 दिसंबर यानी गुरुवार के दिन है। पुराणों के अनुसार भैरव भगवान शिव का दूसरा रूप हैं। भैरव का वाहन श्वान है। भैरव का अर्थ होता है भयानक और पोषक, इनसे काल भी सहमा सहमा रहता है। इस दिन भगवान शिव के अंश से काल भैरव की उत्पत्ति हुई थी। भैरव संहार के देवता हैं।

ऐसे करें व्रत व्रत का संकल्प लेने से पहले भगवान शिव का पूजन करें। मंदिर में जाकर रात्रि जागरण करें। भैरव के वाहन श्वान को दूध, दही, मिठाई आदि खिलाएं। कीर्तन करें, रात्रि जागरण करते समय विधि विधान से पूजा करें और काल भैरव की कथा सुनें।

व्रत की कथा विश्व का कारण और परम तत्व कौन है। इस प्रश्न को लेकर एक बार ब्रह्मा और विष्णु में बहस हो गई।

दोनों अपने आप को ही सर्वश्रेष्ठ कहने लगे। महर्षियों से जब इस बात को लेकर संवाद हुआ तो विष्णु जी ने तो मान गए कि इस धरा पर परम सत्य मौजूद है

लेकिन ब्रह्मा जी ने इस बात को नहीं मान रहे थे। परम तत्व की अवज्ञा करना बहुत बड़ा पाप है। यह बात भगवान शिव को ठीक नहीं लगी और उन्होंने काल भैरव को अपने अंश से उत्पन्न किया। तब ब्रह्मा जी का गर्व नष्ट हो गया।

भैरवाष्टमी हमें काल का भय दिलाती है। कहते हैं जो काल भैरव की शरण में जाता है। वह अंत में भगवान शिव के परमधाम कैलाश पर प्रस्थान करता है।

काल भैरव सदा धर्मसाधक शांत तितिक्षु तथा सामाजिक मर्यादाओं का पालन करने वाला की काल से रक्षा करते हैं।



ऐसा करने से, बजरंग बली सारे कष्ट का हरण कर कामनासिद्धि करते हैं



भारत में शायद ही कोई ऐसा प्रांत होगा जहां बजरंग बली की पूजा न की जाती हो, चूंकि श्री हनुमान रामदूत और भक्त होकर भक्ति, सेवा, श्रद्धा और समर्पण की साक्षात् मूर्ति हैं। यही नहीं श्री

हनुमान चरित्र पावनता और ब्रह्मचर्य व्रत के दृढ़ता से पालन कर सुखद जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि ब्रह्मचर्य से जुड़े पवित्रता, संयम और अनुशासन के भावों को

अपनाना हनुमान भक्ति के लिए भी जरूरी बताया गया है। हमें यह पता है श्री हनुमान रूद्र अवतार हैं। इसलिए यह भी कहते हैं कि शिव की भांति ही वह भी भक्ति और साधना के सरल उपायों से

शीघ्र कृपा कर देते हैं, जो संकटमोचक और कामनासिद्धि करने वाली होती है। हर दिन में नई उमंग, उत्साह, ऊर्जा व आशाएं प्राप्त हों इसके लिए भक्तों को श्री हनुमान जी की पूजा भी पूर्ण समर्पण से करनी चाहिए। रामभक्त होने के साथ ही ये महायोगी और साधक भी हैं। श्री हनुमान के चरित्र

ही लक्ष्यों को भेदने के लिये अगर शास्त्रों में बताए श्री हनुमान चरित्र के अलग-अलग 12 स्वरूपों का ध्यान एक खास मंत्र स्तुति से किया जाए तो साल के 12 महीने बहुत ही शुभ व मंगलकारी साबित हो सकते हैं।

धर्मग्रंथों में बताई खास हनुमान मंत्र स्तुति, जिसे मंगलवार,

हनुमानञ्जनी सूनूर्वायुपुत्रो महाबलः।

रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोमितविक्रमः॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा॥
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत्।
तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्।

के ये गुण संकल्प, एकाग्रता, ध्यान व साधना के सूत्रों से जीवन के लक्ष्यों को पूरा करने की प्रेरणा देते हैं। इस संदेश के साथ कि अगर तन, मन और कर्म को दृढ़ संकल्प, नियम और अनुशासन से साध लिया जाए तो फिर कोई भी बड़ा या कठिन लक्ष्य पाना बेहद आसान हो जाता है। सालभर ऐसे

शनिवार या हनुमान उपासना के खास अवसरों के अलावा हर रोज सुबह या रात को सोने से पहले स्मरण करना न चूकें, ये रही

इस खास मंत्र स्तुति को आप ग्रहण करें। इसमें दर्शित श्री हनुमान के 12 नाम उनके गुण व शक्तियों को भी उजागर करते हैं।

हनुमानजी हमेशा रहते हैं



ऐसे लोगों के साथकलियुग में हनुमानजी का वास है। यह हमारी आस्था और विश्वास है। हममें से किसी ने हनुमानजी को नहीं देखा, वर्तमान समय में जो कहते हैं 'जिन्होंने साक्षात बजरंगबली के दर्शन किए हैं, उनके पास भी कोई प्रमाण नहीं। हनुमानजी हर समय, हमारे आसपास हैं। हमें देख रहे हैं। सत्य बोलने वाले, ईमानदार और नेकी पर चलने वाले परोपकारी लोगों की पुकार अवश्य सुनते हैं। लेकिन, कहते हैं कलियुग में सर्वप्रथम हनुमानजी ने भगवान श्रीराम की कथा पर आधारित 'पवित्र ग्रंथ' 'श्रीरामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास को दर्शन दिए। इसका प्रमाण है कि तुलसीदासजी ने स्वयं अपने ग्रंथों में इस बात का उल्लेख किया है। वह लिखते हैं कि चित्रकूट के घाट पे, भई संतन के भीड़। तुलसीदास

चंदन घिसें, तिलक देत रघुबीर। ये शब्द स्वयं प्रभु हनुमानजी ने तुलसी दास से कहे थे। हम सभी जानते हैं कि हनुमानजी का जन्म क्रेतायुग में हुआ था। वह श्रीराम के अमिट भक्त हैं। उन्होंने क्रेतायुग में वानरराज केसरी और माता अंजना के यहां जन्म लिया था। वाल्मीकि रामायण में हनुमानजी के जन्म के बारे विस्तृत वर्णन मिलता है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत में उल्लेख मिलता है कि द्वापर युग में भी हनुमानजी उपस्थित थे। उन्होंने सर्वप्रथम भीम का अहंकार कम करने के लिए उनकी परीक्षा ली, जहां भीम को वह एक बूढ़े वानर के रूप में मिले, भीम उनकी पृंछ तक न हटा सके।

हनुमानजी ने द्वापर युग में ही कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण और अजरुन के रथ के ऊपर ध्वज में विराजमान रहे। वर्तमान समय में कहा जाता है कि जहां-जहां रामायण कथा का वाचन सच्ची श्रद्धा, आस्था और पूरे विधि-विधान से होता है वहां हनुमाजी जरूर आते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं से उल्लेख मिलता है कि हनुमानजी कलियुग के अंत तक पृथ्वी पर रहेंगे।

किंन वास्तु दोष के चलते विवाह में रूकावट होती है



यदि अरेंज मैरिज में अपनी पसंद की लड़की या लड़का मिल जाए तो वैवाहिक जिंदगी खुशनुमा तरीके से बीत सकती है। लेकिन कई ऐसे कारण होते हैं जब आपकी पसंद का व्यक्ति नहीं मिल पाता ऐसे में कई कारण होते हैं जिनमें से एक होता है वास्तु दोष। यह वास्तु दोष आपके घर के आस-पास या फिर शयन कक्ष में भी हो सकता है। ऐसे में आप कुछ वास्तु टिप्स आजमाकर इन वास्तुदोष को दूर कर सकते हैं और योग्य व्यक्ति की चाह में कई कदम आगे बढ़ सकते हैं। जब कोई मार्ग आपके घर के सामने सीधा प्रवेश करता हो या आकर रुक जाए तो वह कभी-कभी शुभ या अशुभ भी माना जाता है। ऐसी स्थिति से बचना चाहिए। जब कोई विवाह के लिए देखने आए तो इस प्रकार बैठें कि आपका मुख उत्तर दिशा की ओर हो। विवाह योग्य युवक-युवतियों के कमरों की दीवार पर

सुंदर चित्र लगाएं। ध्यान रहे, रोते बच्चों और डूबते सूरज का चित्र कभी न लगाएं। यदि प्रेमविवाह हो रहा है और बुरे सपने या विचार आते हों तो सोते समय तकिए के नीचे चाकू या कैंची रखें। घर के मुख्य द्वार पर शीशा नहीं लगा होना चाहिए। इससे वैवाहिक अच्छा जीवन साथी मिलने से पहले ही

लौट जाता है। विवाह में अतिथियों को ठहराने का स्थान हमेशा पश्चिम दिशा में ही होना चाहिए। यदि घर के मुख्य द्वार के सामने कोई खंभा, वृक्ष, खुली हुई नाली हो तो यह आपके काम में बाधा डाल सकती है। क्योंकि यह सब कुछ नकारात्मक माना जाता है। इसलिए ऐसी जगहों से बचें।

मोहक हो हमारा मन



तन की सुंदरता एक झूठ है और मन की सुंदरता सच। जब तक मन से विकारों का त्याग नहीं होगा, तब तक मन का सुंदर होना असंभव है। तो क्यों न हम मन को ही बना लें मोहक जब लग मनहि विकारा, तब लगि नहिं छूटे संसारा। जब मन निर्मल करि जाना, तब निर्मल माहि समाना।

त कबीर कहते हैं कि जब तक आपके मन में विकार हैं, तब तक सांसारिक प्रपंच से छुटकारा पाना संभव नहीं है। विकारों से मुक्ति के बाद ही भक्ति में मन रमता है और झूठे विकारों से मन भी हटने लगता है। वे कहते हैं कि मन निर्मल होने पर ही आचरण निर्मल होगा और आचरण निर्मल होने से ही आदर्श मनुष्य का निर्माण हो सकेगा। छुटकारा आसक्ति से कबीर के कहे ये शब्द आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

आज की जीवन पद्धति वैसे ही तनावों से भरी है और इसमें गुस्सा, ईर्ष्या, दूसरों में कमियां निकालने की आदत, जैसे मन के विकारों से मुक्ति ही प्राथमिकता है। हमें कुछ पाने की होड़ छोड़कर उन विकारों का त्याग करना होगा, जो दुख का कारण बनते हैं।

कबीर जहां मन को निर्मल करने के लिए कहते हैं, वहीं सांख्य दर्शन जैसे हमारे प्राचीन ग्रंथ भी इच्छा, आसक्ति से मुक्त होने की बात कहते हैं। बाज से शिक्षा लेने

का सुझाव देते हुए इसमें कहा गया है, च्छोग और त्याग की शिक्षा बाज से लेनी चाहिए। बाज पक्षी से जब कोई उसके हक का मांस छीन लेता है तो वह मरणांतक दुख का अनुभव करता है, किंतु जब वह अपनी इच्छा से ही अन्य पक्षियों के लिए अपने हिस्से का मांस, जैसा कि उसका स्वभाव होता है, त्याग देता है तो वह सुख का अनुभव करता है।

जू यानी सारा खेल इच्छा, आसक्ति अथवा अपने मन का है, खुद को बुराई से दूर कर सुख प्राप्त करने का है। तन नहीं, मन हो सुंदर प्रख्यात दार्शनिक ओशो ने कहा था, च्चुम प्लास्टिक सर्जरी करवा सकते हो, तुम सुंदर चेहरा बनवा सकते हो, सुंदर आंखें, सुंदर नाक, अपनी चमड़ी बदलवा सकते हो, अपना आकार बदलवा सकते हो। लेकिन इससे तुम्हारा स्वभाव नहीं बदलेगा।

भीतर तुम लोभी बने रहोगे, वासना से भरे रहोगे, हिंसा, क्रोध, ईर्ष्या, शक्ति के प्रति तुम्हारा पागलपन भरा रहेगा। इन बातों के लिए प्लास्टिक सर्जन कुछ कर नहीं सकता। जू इन शब्दों के साथ ओशो तन को नहीं, मन को सुंदर रखने की बात करते हैं। भीतर की बुराइयों से निजात पाने की शिक्षा देते हैं। सद्गुण की महक सद्गुणों की महक से कौन इंकार कर सकता है। अच्छे कामों को हर तरफसराहा जाता है

और बुरे काम नुकसान कर जाते हैं। कभी-कभी तो ऐसी हानि हो जाती है, जिसकी भरपाई नहीं हो पाती। इस संदर्भ में गौतम बुद्ध ने भी कहा है, च्चुष्य की सुगंध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती, लेकिन मानव के सद्गुण की महक सब ओर फैल जाती है। जू स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी मायावी दुनियादारी को दिल से निकाल देने का पक्ष लेते हैं।

वे कहते हैं, चाव जल में रहे तो ठीक है, लेकिन जल नाव में नहीं रहना चाहिए, इसी प्रकार साधक जग में रहे लेकिन जग साधक के मन में नहीं रहना चाहिए। जू जब तक हम दुनिया के झूठे प्रपंचों में फंसे रहेंगे, तब तक जिंदगी में सुकून की उम्मीद नहीं कर सकते।

क्या खोया, क्या पाया एक बार महात्मा बुद्ध से किसी ने पूछा कि ध्यान से आपने क्या पाया तो बुद्ध ने जवाब दिया, च्छुछ भी नहीं। प्रश्नकर्ता हैरान रह गया, तभी बुद्ध बोले, च्छोकिन मैं बताना चाहता हूँ कि ध्यान से मैंने क्या-क्या खोया है।

गुस्सा, बेचैनी, असुरक्षा, तनाव, मृत्यु या बुढ़ापे का डर जैसी भावनाओं को मैंने खुद से दूर कर दिया है। जू महात्मा बुद्ध के ये वचन साफईंगित करते हैं कि कुछ पाने से मन में छिपे विकारों से छुटकारा पाना ज्यादा महत्वपूर्ण है।



रोजमर्रा के जीवन में व्यक्ति जो भी काम करता है उसका संबंध भूत, भविष्य और वर्तमान से होता है। जीवन में जो भी कार्य किए जाएं तो शास्त्र सम्मत होने चाहिए न की अपनी इच्छा के अनुसार करने चाहिए। इससे सभी देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है। कपड़ों से संबंधित कुछ खास बातों को ध्यान में रखने से व्यक्ति कभी गरीब नहीं होता। शास्त्रों में कहा गया है की नहाने के बाद गिले वस्त्रों को ऊपर से उतारना चाहिए। नदी में स्नान करने के बाद कपड़ों को ऊपर से नीचे की ओर

शास्त्र वस्त्र संहिता...

उतारें। भीगे हुए कपड़ों की चार परत करने के बाद निचोड़ें। कपड़े सुखाते समय पूर्व से या उत्तर से दक्षिण की ओर फैलाना चाहिए। निचोड़े हुए कपड़ों को कंधे पर नहीं रखना चाहिए। नग्न अवस्था में स्नान न करें। शास्त्र वस्त्र संहिता के अनुसार एक वस्त्र धारण करके न तो भोजन करें, न यज्ञ करें, न दान करें, न अग्नि में

आहुति दें, न स्वाध्याय करें, न पितृ तर्पण करें। जिसकी किनारी या मगजी न लगी हो, ऐसे वस्त्र धारण करने योग्य नहीं। पहले के पहने हुए वस्त्र को बिना धोए पुनः नहीं पहनना चाहिए। वस्त्र के ऊपर जल छिड़क कर ही उसे पहनना चाहिए। धन के रहते हुए पुराने और मैले वस्त्र नहीं पहनने चाहिए। मनुष्य को भीगे हुए वस्त्र नहीं पहनने चाहिए। अधिक लाल, रंग बिरंगे, नीले और काले रंग के वस्त्र धारण करना उत्तम नहीं। कपड़ों और गहनों को उल्टा कभी न पहनें।

अपने खान-पान में करें इन चीजें परहेज

शिमला मिर्च में ऑक्सलेट के क्रिस्टल्स पाए जाते हैं जो कैल्शियम में जाकर मिल जाते हैं। इससे कैल्शियम ऑक्सलेट के क्रिस्टल बनते हैं। यही बाद में पथरी बनाते हैं। इसलिए यदि शिमला मिर्च कम खाएंगे तो पथरी से बचे रहेंगे। ऑक्सलेट काफी मात्रा में टमाटर में पाए जाते हैं। इसलिए टमाटर का इस्तेमाल करते समय बीजों को निकाल दें। ऑक्सलेट से भरपूर चॉकलेट को कम से कम खाएं।



क्या मटके में रखा पानी पीना सुरक्षित है?

पारंपरिक रूप से मटके का पानी गले के लिए अच्छा होता है तथा फ्रिज के ठण्डे पानी की तुलना में इसका सेवन करना कहीं अधिक अच्छा होता है। आपने देखा होगा कि आपके परिवार के सदस्य केवल मटके का पानी पीने की सलाह देते हैं ताकि आप बीमार न पड़ें। यदि आपको अक्सर सर्दी, खांसी और गले की खराश की समस्या रहती है तो वे ऐसा महसूस करते हैं कि मटके का पानी पीना आपके लिए ठीक नहीं है। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि स्टोर किए गए पानी को पहले उबालना और छानना



चाहिए। इस पानी को प्राकृतिक रूप से ठंडा होने दें। जब यह पानी कमरे के तापमान पर पहुंच जाए तो फिर आप इसे मटके या सुराही में एकत्रित करके रख सकती हैं।



ध्यान में रखने योग्य कुछ बातें

1. अपने मटके या सुराही को कीटाणु रहित रखें। मिट्टी का घड़ा में मैल जल्दी एकत्रित होता है। अच्छा होगा यदि हर उपयोग के बाद आप मटके को पहले धिस कर साफ करें, सुखाएं और उसके बाद ही उसमें पानी भरें।
2. कई लोग सुराही में पानी एकत्रित करते हैं। सुराही एक मिट्टी का बर्तन होता है जिसकी गर्दन बहुत संकरी होती है। लोगों को चौड़े मटके की तुलना में पानी एकत्रित करने के लिए यह अधिक अच्छी लगती है।
3. बाजार में कई तरह के मिट्टी के मटके उपलब्ध हैं। सुराही छोटी होती है जिसे संभालना आसान होता है जबकि मटके या घड़े को उठाना कठिन होता है।
4. कई लोग ऐसी सुराही रखते हैं जिसमें छोटा नल लगा हो क्योंकि इनका उपयोग करना बहुत आसान होता है।
5. यदि आप मटके का उपयोग करते हैं तो धूल, कीड़ों तथा अन्य प्रदूषकों से पानी को बचाने के लिए इसे हमेशा ढक कर रखें।
7. मटके से पानी निकालने के लिए साफ सुथरे, लंबे करछुल का उपयोग करें। गिलास डबाने से पानी को हाथ लगाने से पानी गंदा हो सकता है। ध्यान रखें कि मटके में कोई दरार न हो या इसके छिलके न निकलें हों तथा यदि आपके मटके से पानी लीक हो रहा हो तो इसे बदल दें।



डेंगू-चिकनगुनिया होने पर अपनाएं ये घरेलू नुस्खे

डेंगू और चिकनगुनिया में प्लेटलेट्स काफी कम हो जाते हैं। इस पर नियंत्रण पाने के लिए पपीते के पत्ते खासतौर से बेहद असरदार साबित रहते हैं। इसमें मौजूद पेपेन शरीर के पाचन को सही रखता है। इसका जूस पीने से प्लेटलेट्स तेजी से बढ़ते हैं। डेंगू और चिकनगुनिया को दूर भगाने के लिए नारियल का पानी भी बेहद फायदेमंद साबित होता है। लिहाजा जब इस तरह की बीमारी आपको जकड़े तो जमकर नारियल के पानी का सेवन करें। इससे डेंगू के बुखार में आराम मिलता है।

नारियल पानी में मौजूद जरूरी पोषक तत्व जैसे मिनरल्स और एलेक्ट्रोलाइट्स शरीर को मजबूत बनाने में मदद करता है। रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए तुलसी के पत्ते भी काम में लिए जा सकते हैं। तुलसी के पत्तों को पानी में उबालें। ठंडा करके पीएं। इससे वायरल इन्फेक्शन ठीक होता है। डेंगू के बुखार में मेथी की पत्तियां उबालकर चाय बनाकर पीना भी फायदेमंद रहता है। इससे डेंगू का वायरस दूर होता है। इसी तरह से काली मिर्च के साथ तुलसी के पत्तों को उबाल लें। ये पानी एंटी बैक्टीरियल होता है। इसे पीने से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

नौकरी पेशा लोगों में कार्पेल टनल सिंड्रोम सबसे ज्यादा

कोई भी जॉब हो, आजकल हर काम कम्प्यूटर पर ही सबसे ज्यादा होता है ऐसे में लोग, 8 से भी ज्यादा घंटे कम्प्यूटर या लैपटॉप के सामने बिता देते हैं। ऐसे में हर किसी का लाइफस्टाइल भी काफी अनहेल्दी हो जाता है और उन्हें कई प्रकार की बीमारियां घेर लेती हैं। कार्पेटेड सेक्टर में काम करने वाले लोगों को नौकरी के तनाव, अस्वास्थ्यकारी जीवनशैली, गलत तरीके से बैठने के कारण भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नौकरी करने वाले लोगों में कार्पेल टनल सिंड्रोम सबसे ज्यादा होता है जिसके बारे में हाल ही में किए गए सर्वे से पता चला है। आइए जानते हैं इसके बारे में कुछ खास बातें-

1. कार्पेल टनल सिंड्रोम का प्रभाव, व्यक्ति के मीडियन नर्व पर पड़ता है जो कि हाथ या कलाई पर पड़ने वाले दबाव की वजह से होता है। इससे मीडियन नर्व में सूजन आ जाती है।



2. कार्पेल टनल सिंड्रोम, में सुन्नपन आ जाता है और दर्द होने लगता है। हाथों, कलाई और उंगलियों में काफी दर्द होने लगता है।
3. हाल ही में एक हुई एक रिसर्च स्टडी से पता चला है कि कार्पेल टनल सिंड्रोम,

कार्पेटेड सेक्टर के लोगों में ज्यादा होता है जो कि कम्प्यूटर पर ज्यादा समय बिताते हैं।

4. कार्पेल टनल सिंड्रोम, कलाई पर जोर पड़ने की वजह से सबसे ज्यादा होता है क्योंकि रक्त का संचार रुक जाता है।

5. कार्पेल टनल सिंड्रोम, उन लोगों में भी देखने को मिलता है जो सिलाई, सफाई, खाने को

प्रसंस्करण करने का काम करते हैं। क्योंकि उन लोगों के हाथ भी हमेशा चलते रहते हैं।

6. कार्पेल टनल सिंड्रोम की वजह से आर्थराइटिस जैसी बीमारी होने का खतरा भी बढ़ जाता है, अगर इस सिंड्रोम का सही समय

पर इलाज न करवाया जाए। 7. कुछ देशों में, कर्मचारियों को कार्पेल टनल सिंड्रोम होने पर उन्हें इक्विट एक्ट 2010 के तहत कवर भी मिल जाता है क्योंकि उनके काम की वजह से उन्हें यह समस्या झेलनी पड़ी।

दो हैदराबादी महिलाओं की 27 यात्राएं, धार्मिक पर्यटन को दिया नया आयाम

तीर्थयात्रा से आगे बढ़कर आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों पर जोर

भारत के धार्मिक और आध्यात्मिक स्थल हर वर्ष लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। हालांकि, अधिक व्यक्तिगत और विशेष अनुभव की तलाश करने वाले यात्रियों के लिए यात्रा केवल टिकट बुक कराने और ठहरने की व्यवस्था करने तक सीमित नहीं होती। भीड़भाड़ वाले धार्मिक आयोजनों में पहुंचना, सार्थक सांस्कृतिक अनुभवों की पहचान करना और समूह में यात्रा की समुचित व्यवस्था करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों और छोटे समूहों में व्यवस्थित यात्रा पसंद करने वाले लोगों के लिए यह चुनौती और भी बढ़ जाती है।

इसी आवश्यकता को पहचानते हुए हैदराबाद स्थित एनआर ट्रैवलबडीज़ धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक यात्राओं के एक विशेष क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। इस यात्रा उपक्रम की स्थापना वर्ष 2024 में 46 वर्षीय नेहा राजगढ़िया और 51 वर्षीय राधिका जालान ने की थी। अब तक यह उपक्रम लगभग 27 यात्राओं का आयोजन कर चुका है, जिनके माध्यम से 1,000 से अधिक प्रतिभागियों को कुंभ मेले, अयोध्या, वाराणसी और हाल ही में कोलकाता के दुर्गा पूजा समारोहों सहित विभिन्न स्थलों एवं आयोजनों तक पहुंचाया गया है।

संस्थापक महिलाओं का मानना है कि धार्मिक पर्यटन में पारंपरिक तीर्थयात्रा पैकेजों से आगे बढ़कर ऐसे सुविचारित अनुभव विकसित करने की व्यापक संभावनाएं हैं, जिनमें आस्था, विरासत, स्थानीय परंपराएं, खानपान, कला और सामुदायिक सहभागिता का समावेश हो।

नेहा राजगढ़िया और राधिका जालान का कहना है, हमने ऐसी सुव्यवस्थित समूह यात्राओं की आवश्यकता महसूस की, जिनके माध्यम से लोग भारत के आध्यात्मिक स्थलों का आरामदायक और सार्थक अनुभव प्राप्त कर सकें। अनेक यात्री इन स्थानों पर जाना चाहते हैं, लेकिन वे चाहते हैं कि यात्रा की योजना, व्यवस्थाओं और संपूर्ण अनुभव की जिम्मेदारी कोई अनुभवी व्यक्ति संभाले। हमने इसी आवश्यकता



को पूरा करने का प्रयास किया है।

तीर्थयात्रा से आगे सांस्कृतिक अनुभव

धार्मिक यात्रा को आमतौर पर मंदिरों के दर्शन, धार्मिक अनुष्ठानों में भागीदारी या तीर्थारटन से जोड़कर देखा जाता है। एनआर ट्रैवलबडीज़ इस अनुभव को व्यापक बनाते हुए गंतव्य की विशेषताओं और यात्रा में शामिल लोगों की रुचियों के अनुरूप कार्यक्रम तैयार करती है।

कंपनी की यात्रा योजनाओं में कुंभ मेले जैसे विशाल धार्मिक आयोजन, अयोध्या और वाराणसी जैसे प्रमुख तीर्थस्थल तथा कोलकाता का दुर्गा पूजा जैसा सांस्कृतिक उत्सव शामिल हैं। इसकी विशेषता यह है कि यात्रा को केवल किसी धार्मिक स्थल तक पहुंचने का माध्यम नहीं, बल्कि अपने आप में एक यादगार अनुभव बनाने का प्रयास किया जाता है।

उदाहरण के तौर पर, वाराणसी की यात्रा में शहर के आध्यात्मिक वातावरण और सांस्कृतिक परंपराओं को

करीब से महसूस करने का अवसर मिलता है। वहीं, कोलकाता में सजे-धजे दुर्गा पूजा पंडालों को देखना, बंगाली संगीत और नृत्य का आनंद लेना, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद चखना तथा यह समझना शामिल हो सकता है कि किस प्रकार एक धार्मिक उत्सव पूरे शहर के सांस्कृतिक समारोह में बदल जाता है।

संस्थापकों के अनुसार, वे अब तक अकेले वाराणसी की 20 से अधिक यात्राएं कर चुकी हैं। वाराणसी से उनके विशेष जुड़ाव और बार-बार वहां यात्रा आयोजित करने के कारण उन्हें 'बनारस गर्ल्स' के नाम से भी जाना जाने लगा है।

काशी से कोलकाता तक:

यात्रा नहीं, अनुभवों की अनूठी शृंखला

हालिया पहल 'अमारमणि – शुभो पूजा 2026 : बंगाल की भावना का उत्सव' के अंतर्गत 12 से 14 अक्टूबर तक हैदराबाद और अन्य शहरों के 30 प्रतिभागियों को कोलकाता की यात्रा कराई गई।

इस कार्यक्रम के अनुसार, वे अब तक अकेले वाराणसी से रूबरू कराने के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी। प्रतिभागियों ने सजे हुए पूजा पंडालों का भ्रमण किया, ढोल की थाप के साथ पारंपरिक स्वागत का अनुभव लिया तथा बंगाली संगीत और नृत्य प्रस्तुतियों का आनंद उठाया। कार्यक्रम में लोकप्रिय रस्म 'सिंदूर खेला' भी शामिल रही।

इसके अलावा, प्रतिभागियों ने पारंपरिक बंगाली सामूहिक भोज का आनंद लिया और साड़ियों, फैशन उत्पादों, हस्तशिल्प तथा स्थानीय वस्तुओं के प्रदर्शन एवं बिक्री के लिए लगाए गए स्टॉलों का अवलोकन किया।

उल्लेखनीय है कि कोलकाता की दुर्गा पूजा को वर्ष 2021 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया था। यह उत्सव दर्शाता है कि किस प्रकार धार्मिक आयोजन कलात्मक नवाचार, सामुदायिक भागीदारी और पर्यटन को एक साथ जोड़ सकता है।

एनआर ट्रैवलबडीज़ के लिए यह यात्रा इस बात का उदाहरण बनी कि सांस्कृतिक उत्सवों को किस तरह सोच-समझकर तैयार किए गए विशेष पर्यटन अनुभव का केंद्र बनाया जा सकता है।

हर आयु और वर्ग के यात्रियों के लिए विशेष पहल संस्थापकों के अनुसार, उनकी यात्राएं प्रतिभागियों की रुचियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की जाती हैं। उनके ग्राहकों में विवाहित जोड़े, वरिष्ठ नागरिक और युवा अविवाहित यात्री भी शामिल हैं, जो सामान्य परिस्थितियों में धार्मिक पर्यटन यात्रा में शामिल होने के बारे में शायद न सोचें।

कंपनी यात्रा की अवधि को सुविधाजनक रखने और सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित बनाने पर भी जोर देती है।

इससे उन लोगों के लिए यात्रा करना आसान हो जाता है, जो हर छोटी-बड़ी व्यवस्था स्वयं करने के बजाय संगठित यात्रा को प्राथमिकता देते हैं।

संस्थापकों का कहना है कि विशेष रूप से बुजुर्ग प्रतिभागियों से मिलने वाली सराहना उनके लिए बेहद उत्साहवर्धक है। यात्रा के दौरान की गई देखभाल और व्यवस्थाओं से संतुष्ट वरिष्ठ नागरिकों द्वारा दिए जाने वाले आशीर्वाद उनके प्रयासों को और अधिक प्रेरित करते हैं।

व्यापक धार्मिक पर्यटन बाजार में काम करने के बावजूद, व्यवस्थित समूह यात्राओं पर कंपनी का विशेष ध्यान उसे अलग पहचान देता है। इसका उद्देश्य संगठित यात्रा से मिलने वाली सुविधा और भरोसे को व्यक्तिगत खोज, सांस्कृतिक अनुभव तथा स्थानीय परंपराओं से जुड़ने के अवसरों के साथ जोड़ना है।

भारत के यात्री जिस प्रकार अपनी विरासत, परंपराओं और स्थानीय समुदायों से जुड़ने वाले अनुभवों की तलाश कर रहे हैं, उसे देखते हुए एनआर ट्रैवलबडीज़ जैसे उपक्रम यह तलाश रहे हैं कि आध्यात्मिक यात्रा को पर्यटन उद्योग के अधिक सुविचारित और अनुभव-आधारित क्षेत्र के रूप में कैसे विकसित किया जा सकता है।



नेहा राजगढ़िया और राधिका जालान का उद्देश्य यात्रियों को भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक समृद्धि से परिचित कराना है। वे चाहती हैं कि प्रत्येक यात्रा सुव्यवस्थित, व्यक्तिगत रूप से अर्थपूर्ण और लंबे समय तक याद रहने वाला अनुभव बने।

एनआर ट्रैवलबडीज़ हैदराबाद स्थित एक यात्रा उपक्रम है, जिसकी स्थापना वर्ष 2024 में नेहा राजगढ़िया और राधिका जालान ने की थी। यह कंपनी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक समूह यात्राओं के आयोजन में विशेषज्ञता रखती है। अब तक लगभग 27 यात्राओं के माध्यम से 1,000 से अधिक प्रतिभागियों को विभिन्न धार्मिक स्थलों, आध्यात्मिक आयोजनों और सांस्कृतिक उत्सवों का अनुभव कराया जा चुका है।

संपादकीय

सियासी समीक्षा का दौर शुरू

अगले

अगले विधानसभा चुनाव की कुछ शर्तें तय हो रही हैं और यह एक रूटीन सी है।
 कि सत्ता अपना चौथा साल इस लिहाज से जाहिर करे। विपक्ष का
 कदमताल अपनी संगठन की ताकत को हिसाब दे। हिमाचल में एक हिसाब केंद्र बनाम राज्य
 की पट्टी पर खड़े अवरोधों का भी होगा। कर्मचारियों की शिनाख्दा में सरकार के फैसलों का
 महत्वांकु दिखाई दे, इसलिए वहीं पुरानी गंगा में कुछ पाप धुलेंगे। राजनीति का अपना दर्दां है।
 और इसलिए मुकाबला यह कि किस पार्टी में अधिक गुट हैं। अनूट मिलन समारोह और
 आतंरिक रार की तहों में फिसलते समीकरण। कुल मिलाकर अब राजनीतिक समीक्षा का यह तह
 दौर मुकाबलों की नई फेहरिस्त पैदा करेगा। कांग्रेस और भाजपा के बीच संयोजकों के तह
 किलेबंदियों। भाजपा अपने प्रचार के ओजार पैसे कर रही है, तो कांग्रेस की जमात 'चोरा
 बचाओ, देश बचाओ' के साहसिक कदम उठाती हुई दिखाई देगी। महत्त्वपूर्ण यह नहीं कि
 सिपायों बुद्ध किस करवट बैठेंगे, बल्कि यह है कि सत्ता अपना मजनीतिवत् अनुष्ठान कैसे
 करती है। सरकार के पास रिपोर्ट कार्ड हैं, जिसका इस्तेमाल पंचायत, शहर से समूचे प्रदेश
 तक हो सकता है। नई पंचायतों की गणना के
 तिलक अगर ठौर बनाने तक सफल हो गए तो

विपक्ष का कदमताल अपनी संगठन की ताकत का हिसाब दे। हिमाचल में एक हिसाब कैंद बनाम राज्य की पट्टी पर खड़े अवरोधों का भी होगा। कर्मचारियों की शिनाख्त में सरकार के फैसलों का महाकुंभ दिखाई दे, इसलिए वहीं पुरानी गंगा में कुछ पाप बुलेंगे। राजनीति का अपना दौर है और इसलिए मुकबला यह कि किस पार्टी में अधिक गुट हैं। अनूटे मिलन समारोह और आतिथिक रस की तहों में फिसलते समीकरण। कुल मिलाकर अब राजनीतिक समीक्षा का यह दौर मुकबलों की नई फेरिस्ट पैदा करेगा। कांग्रेस और भाजपा के बीच संयोजकों के तहत किंबदंतियाँ। भाजपा अपने प्रचार के औजार पने कर रही है, तो कांग्रेस की जमात 'दोत बचाओ, देश बचाओ' के साहसिक कदम उठाती हुई दिखाई देगी। महत्वपूर्ण यह नहीं कि सियासी युद्ध किस करवट बैठेंगे, बल्कि यह है कि सत्ता अपना राजनीतिक अनुष्ठान कैसे करती है। सरकार के पास रिपोर्ट काई है, जिसका इस्तेमाल पंचायत, शहर से समूचे प्रदेश तक हो सकता है। नई पंचायतों की गणना के तिलक अगर ठौर बनाते तक सफल हो गए तो यह कवायद याद की जाएगी। नगर निकाय अगर नागरिक सहूलियतों में इंजाफा कर पाएंगे, तो सरकार की पदवी संभल जाएगी। ऐसे में सरकार को अपने फैले हुए प्रयासों को समेटना होगा और बजट की लागत से खड़े किए गए स्तंभों को अच्छे से पैंट करना होगा। बेशक सरकार ने कई मॉडल बनाने शुरू किए, जिन्हें अब पूर्ण रूप से पेश करना होगा। गारंटियों के राजनीतिक दौर अब आगामी चुनाव की फतह को प्रदर्शित करने का जरिया बन सकते हैं और सरकार अगर इसे फार्मूला रस की तरह निभा पाई तो अंतर देखा जाएगा। राजनीति खुद को देखने के साथ-साथ कर्मचारी वर्ग को किताब देख पाती है, यह एक गोल्डन रूल सदा रहा है। हिमाचल के विधानसभा चुनावों से मुख्यमंत्रियों की ताकत ऐसे फैसलों में महसूस होती रही है, जो अति उदार और लोकप्रियता के मानकों पर आधारित होती हैं। जाहिर है सुखविंदर सुक्खू अपनी महिमा के अनुरूप जनता की ऐसी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास कर रहे हैं। अंततः जनता क्या देखना चाहेगी यह तय करना विपक्ष में जिम्मेदारी का एहसास रहा है। बतौर नेता विपक्ष जयराम ठाकुर सरकार के विरोध में अपनी पताका फहराते हुए कहां पहुंचें, इसका अवलोकन ही बता पाएगा कि भाजपा में कौनसा गुट भारी है। कम से कम यह तो दिखाई देता है कि जयराम ठाकुर की मुलाकातें दिल्ली में प्रधानमंत्री के कक्ष में सुरू से होती हैं। एक गणित उन्हें दिल्ली दरबार से तमाम उत्तराधिकार और दायित्व प्रदान करता हुआ दिखाई देता है। दूसरी तरफ राजनीतिक व प्रशासनिक तौर पर सशक्त बनकर उभरे सुखविंदर सिंह सुक्खू भी कांग्रेस के मॉडल में अपनी जाह की मजबूती से आगामी चुनाव को देख रहे हैं। ऐसे में क्या पिछले चार साल का राजनीतिक दौर ही आगामी चुनाव का आमना सामना करेगा। क्या प्रदेश के पूर्व में सुखविंदर सिंह सुक्खू या पश्चिम में जयराम ठाकुर होंगे या उत्तर-पश्चिम ध्रुव बदलेंगे। जो भी हो चार वर्ष के खाकें में सत्तारूढ़ दल की सारी कर्मठता, कार्यसंस्कृति और क्षमता सुक्खू के हाथों में है। दूसरी ओर जयराम ठाकुर भी अपनी जमीन से अगर ईंच भी पीछे नहीं हटें, तो आगे बढ़ते उनके अरमान हमेशा दो दो हाथ करते रहे हैं। अब देखना यह है कि भाजपा अपने केंद्र से कितनी शक्ति-कितनी ऊर्जा जयराम को देती है या केंद्र सरकार के कौन से फैसले हिमाचल को मरहम लगाते हैं। दूसरी ओर सुक्खू का रिपोर्ट काई 68 विधानसभा क्षेत्रों में कितनी ग्रीन बसें या तेलियाँ, पंचायतों में पैसे, पेंशनदारों के

कुछ

अलग

कहानी की मांग...

हमारी

हमारी भारतीय फिल्मों की भी कथा अनंत है। मेरी तो समझ में आज तक की नहीं आया है कि इसमें कोई कहानी होती भी है। परंतु अभिनेता या अभिनेत्री से बात करके देखिये, वे कहेंगे उन्हें अमुक सीन तो कहानी की मांग पर करना पड़ा। गोया कहानी नहीं, काला धंधा हो, जिसमें भानुमति के पिटारे की तरह तमाम काठ-कबाड़ भरा हो। कहानी की मांग के आसरे नायिका शरीर पर एक तार भी नहीं रखना चाहती या फिर स्वीमिंगपूल में नहा लेगी या बाथरूम में स्नान-दृश्य देगी अथवा सुहगरात को एकदम जीवंत बना देगी। लोग सोचते हैं कि कितना सजीव चित्र था, परन्तु वह असंलिप्त में नहीं अपितु फिल्मया गया था। वह एक तरह से कहानी की मांग थी। लोग आरोप लगाते हैं कि ये फिल्मों की कहानियां लिखते हैं ऐसे लोग, उन्हें अच्छी साहित्यिक कहानियां का ज्ञान नहीं होता, परन्तु यदि हम जिन अच्छी साहित्यिक विषयों पर बनी फिल्मों को उठाकर देखें, जिन्हें कला फिल्म कहा गया है।

दुनिया

दुनिया के 50 देशों मिलकर संयुक्त राष्ट्र पर हस्ताक्षर कर संयुक्त राष्ट्र किया था, जिसके बाद से प्रतिवर्ष संयुक्त राष्ट्र दिवस मनाया जा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंतरा अधिक समतापूर्ण और न्यायोचित एक नए संगठन की स्थापना का जो पांच राष्ट्र मंडल सदस्यों तथा निवासित सरकारों द्वारा 12 जून 1 हस्ताक्षरित अंतर-मैत्री उद्घोषण सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त उद्घोषणा के अंतर्गत एक स्वतंत्र हेतु कार्य करने का आह्वान किया लोग शांति और सुरक्षा के साथ भर् में रह सके तथा निजीकरण एवं आ मार्ग की खोज कर सकें। उसके बाद संविधान संघ, अमेरिका, चीन प्रतिनिधियों द्वारा वाशिंगटन के एस्टेट में कई बैठकों के आयोजन शांतिरक्षक वैश्विक संस्था बनाने की को गई, जिसके आधार पर 50 देश के बीच 1945 में वाचीत हुई औ को सभी 50 देशों द्वारा चार्टर पर ह के बाद यह चार्टर 24 अक्तूबर 19 दिवस। सभी से प्रतिवर्ष 24 अक्तूबर दिवस' मनाया जाने लगा।

अंतराष्ट्रीय संघर्षों में हस्तक्षेप क स्थापित करते हुए संयुक्त राष्ट्र शक्तियों प्रदान की गई कि वह अ ही देशों को विश्व शांति के

देश

दुनिया से

आयुष्मान भारत और प्राइवेट हेल्थ इश्योरेंस क्या आपको दोनों की ज़रूरत है ?

लाखों भारतीयों के लिए, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेवाई) ने स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को आसान बनाने में अहम भूमिका निभाई है। सीमित आर्थिक संसाधनों वाले परिवारों के लिए यह योजना मेडिकल इमरजेंसी के समय आर्थिक सहारा साबित हुई है। इससे परिवारों को इलाज के खर्च की चिंता नहीं करनी होती है और स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित नहीं होना पड़ता है। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन ने इस सोच को और मजबूत किया है। इसके तहत ज्यादा (आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट) सिस्टम में 90 करोड़ से ज्यादा नागरिकों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। गौरतलब है कि इसमें लगभग आठ रजिस्ट्रेशन महिलाओं के हैं। एबी-पीएमजेवाई के तहत पात्र परिवारों को हर साल 5 लाख तक का कैशलेस हॉस्पिटलाइज़ेशन कवरेज देकर स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुंच बेहतर की गई है और गंभीर बीमारियों या मेडिकल इमरजेंसी के कारण पड़ने वाले आर्थिक बोझ को कम करने में मदद मिली है। हालांकि, इससे एक जरूरी सच्चाई भी सामने आती है, कि लाखों भारतीय मेडिकल इमरजेंसी के दौरान फार्मेशनियल मदद पर निर्भर रहते हैं, फिर भी कई लोग मानते हैं कि आयुष्मान भारत कवरेज होने से प्राइवेट हेल्थ इश्योरेंस की जरूरत खत्म हो जाती है। सच यह है कि सरकारी योजना आर्थिक सुरक्षा जरूर देती है, लेकिन हर तरह की स्वास्थ्य जरूरत को पूरा करने के लिए यह हमेशा पर्याप्त नहीं होती। मेडिकल क्षेत्र में बढ़ती महंगाई, इलाज के खर्च में लगातार बढ़ाव और एडवांस मेडिकल टेक्नोलॉजी के बढ़ते इस्तेमाल के साथ, स्वास्थ्य सेवाओं का खर्च कई मामलों में योजना के तहत मिलने वाले कवरेज से ज्यादा हो सकता है। ऐसे में केवल सरकारी इश्योरेंस पर निर्भर रहने से कुछ परिस्थितियों में व्यक्ति और परिवारों को अपनी जेब से काफी खर्च करना पड़ सकता है। आयुष्मान भारत में क्या कवर किया जाता है: आयुष्मान भारत पात्र परिवारों को हॉस्पिटलाइज़ेशन कवरेज देता है, जिसके तहत पूरे भारत में योजना से जुड़े सरकारी और प्राइवेट हॉस्पिटल्स में कैशलेस इलाज की सुविधा मिलती है। इस योजना में कई तरह के मेडिकल प्रोजेडर कवर होते हैं, जिसमें पहले से मौजूद कई बीमारियां भी शामिल हैं। इसमें परिवार के सदस्यों की संख्या, उम्र या लिंग को लेकर भी कोई पाबंदी नहीं है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए यह सुरक्षा बेहद अहम है। फिर भी, यह समझना जरूरी है कि आयुष्मान भारत एक सरकारी स्वास्थ्य सुरक्षा योजना है, जिसमें इलाज की पहलू से तय दवाएं व रेफरिंग और नेटवर्क हॉस्पिटल्स ही शामिल होते हैं। किसी भी स्वास्थ्य योजना की तरह, इसकी भी कुछ सीमाएं होती हैं।

5 लाख हमेशा पर्याप्त नहीं होते..

मेडिकल क्षेत्र की महंगाई और इलाज के बढ़ते खर्च के साथ 5 लाख की कवरज सिर्फ एक या दो बार हाँस्पिटल में भर्ती होने पर ही खत्म हो सकती है।

हृदय से जुड़ी किसी प्रोसीजर के बाद आईसीयू में भर्ती होने और ठीक होने, या कैन्सर के लंबे समय तक चलने वाले इलाज में कुल मेडिकल खर्च उपलब्ध कवरज से ज्यादा हो सकता है, क्योंकि कैन्सर में कई बार हाँस्पिटल जना पड़ता है, इसी तरह कोई ऐसी बीमारी, जिसमें लंबे समय तक इलाज की जरूरत हो, उम्में या इस तरह के सभी मामलों में कुल मेडिकल खर्च उपलब्ध कवरज से ज्यादा हो सकता है। ऐसे में मरीजों को अतिरिक्त खर्च अपनी जेब से उठाना पड़ सकता है। प्राइवेट हेल्थ इंश्योरेंस में अक्सर ज्यादा सुविधाएं और विकल्प मिलते हैं। पॉलिसी के आधार पर, आपको

संयुक्त राष्ट्र दिवस (24 अक्टूबर) पर विशेष

81 साल बाद भी अधूरी है संयुक्त राष्ट्र की शांति-प्रतिज्ञा



सहयोगों के द 1944 में का ब्रिटेन के बर्बटन ओक्स के के बाद एक प्रतीक्षा तैयार 6 जून 1945 अर किए जाने से प्रभावो हो संयुक्त राष्ट्र उद्देश्यों से के उद्देश्य से के ओ इतनी सदस्य देशों केही भी तैनात ना के बाद से त्रुटते गए और सदस्य संघ के हो चुकी है । परिषद वाले फ्रांस, रूस संघ के मुख्य उद्देश्यों में युद्ध रोकना, मानवाधिकारों की रक्षा करना, सभी देशों के बीच मित्रवत संबंध कायम करना, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को निभाने के प्रक्रिया जुटाना, सामाजिक एवं आर्थिक विकास, निर्धन तथा भूखे लोगों की सहायता करना, उनका जीवन स्तर सुधारना, बीमारियों से लड़ना इत्यादि शामिल हैं और इन उद्देश्यों को निभाने के लिए 1948 में मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा प्रमाणित की गई । हालांकि विद्यमान है कि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के इन 81 वर्षों में एवं वैश्विक संस्था अब धीरे-धीरे अपनी प्रासंगिकता खोने लगी है । दरअसल बीते 81 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, अव्यवस्था, हथियार, मीडिया, समाज, मुद्रा तथा समाज से संबंधित तमाम नीतियां इसके कांक्षीय स्थायी सदस्य देशों ब्रिटेन, अमेरिका, रूस तथा फ्रांस के राष्ट्रीय हितों के अनुरूप ही निर्धारित की जाती रही हैं, जिस कारण ऐसी नीतियों का खामियाजा भारत के अलावा जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, दक्षिण कोरिया, ब्राजील, सयन्दी अरब, संयुक्त अरब अमीरात जैसे कई अन्य देशों को भुगतना पड़ा है, जो संयुक्त राष्ट्र महासभा की स्थायी सदस्यता के लिए तमाम माणदंडों को पूरा करने के बाव भी दशकों से सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य बनने के लिए प्रयासरत हैं ।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के आठ दशकों में विश्व के सामरिक और आर्थिक समीकरण पूरी तरह बदल चुके हैं लेकिन इतना लंबा समय बीत जाने और तुमके वैश्विक समीकरण पूरी रूप से बदल जाने के बावजूद वीटो अधिकार वाले पाँचों स्थायी सदस्यों में से कोई भी अपने वीटो अधिकार और स्थायी सीट को छोड़ने को तैयार नहीं है। हालाँकि स्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ाने पर संयुक्त राष्ट्र में आम सहमति है लेकिन चीन को खासकर एशिया से वीटो अधिकार वाले सदस्यों की संख्या बढ़ाना किसी भी कोमत पर स्वीकार नहीं है, जहाँ स्थायी सदस्यता के दोनों दावेदारों (भारत और जापान) पर वह विभिन्न कारणों से संदेह करता है। भारत ने जिस चीन को मान्यता देने में पहल की थी और सुरक्षा परिषद में उसकी स्थायी सीट को सिद्धांत के तौर पर लेने से मना कर दिया था, आज वही चीन भारत की स्थायी सीट के मार्ग में रोड़े अटक रहा है। भारत चीन के वीटो पावर के कारण ही सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य नहीं बन पा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पारित किए जाने वाले प्रस्ताव बाध्यकारी प्रकृति के नहीं होते। आश्चर्य की बात है कि महासभा में 193 सदस्य देशों द्वारा पारित किए जाने वाले प्रस्ताव भी सुरक्षा

रूस-यूक्रेन युद्ध हो या इजरायल-फिलिस्तीन अथवा अमेरिका-ईरान युद्ध, इन संघर्षों में दोनों ही पक्षों के हजारों बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं। हजारों परिवार उजड़ चुके हैं, लाखों की आबादी पलायन की त्रासदी से जूझ रही है, शहर के शहर मलबे में तब्दील हो रहे हैं लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ इन संघर्षों को रोकने के लिए कुछ नहीं कर सका है। इसीलिए दुनिया में जगह-जगह युद्ध टालने के लिए संयुक्त राष्ट्र की ओर से ठोस योजनाओं पर अमल किए जाने की जरूरत महसूस होती रही है क्योंकि इस वैश्विक संकट का गुनघन ही दुनिया में अमन-चैन कायम रखने के उद्देश्य के साथ किया गया था लेकिन चिंता की बात है कि इन युद्धों में उसकी निर्णयिता समुच्च मानन सभ्यता पर भारी पड़ रही है। भीषण हो रहे इन युद्धों के कारण दुनिया अब दो धड़ों में बंट रही है और संयुक्त राष्ट्र के अधिकांश सदस्य देश भी अब केवल बयान जारी करने से आगे नहीं बढ़ रहे। बेहराहल, यदि अभी भी सुरक्षा परिषद की पुनर्गठन की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ती है तो यह संस्था आने वाले समय में अपना महत्व खो देगी। सभी मायनों में दुनिया की इस सबसे बड़ी पंचायत को सह गंभीर आमसभ्यता की जरूरत के साथ पर्याप्त सुधारों की सख्त दरकार है।

आप क

नज़रिया

'वोटर नाम' का घोटाला

चुनाव

चुनाव आयोग का एक और करतूत सामने आई है। इसे मतदाता सूची शुद्धिकरण के नाम पर 'बग़ घोटाला' करार दिया जा सकता है। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया में मतदाताओं के नामों की बदल दिए गए। अथवा उनके पिता का नाम ही बदल दिया गया। यह करतूत मतदाता सूची के अंतिम संस्करण के प्रकाशन के बाद सामने आई है। ऐसे कई और मामले भी हो सकते हैं कि आम मतदाता अप्रसन्न होगा कि अंततः वह मतदाता बन गया है, सूची में उसका नाम दर्ज हो गया है, लेकिन जब चुनाव होगा और वह मतदान करने जाएगा, तो सूची में कोई और नाम होगा। वह अपना सिर पीट लेगा। चुनाव अधिकारी से बचस भी करेगा और अपना मतदाता पहचान-पत्र भी दिखाएगा, लेकिन चुनाव अधिकारी के लिए तो मतदाता सूची ही मान्य और वैध दस्तावेज है। देश का मतदाता असहाय है। यह चुनाव आयोग आँख कर क्या रहा है? उसके मंसुवे क्या हैं? क्या वाकई वह लोकतंत्र को कुतर रहा है? कांग्रेस ने लखनऊ में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कुछ बेहद गंभीर और संवेदनशील खुलासे किए हैं। उप्र की पीलीभीत सदर विधानसभा सीट का ही उदाहरण लें, तो कोई भी चीक सकता है। इस क्षेत्र में 13,150 मतदाताओं के नाम बदल दिए गए हैं, हालांकि मतदाता पहचान-पत्र के 'एपिक' और सीरियल नंबर यथावत हैं। इस क्षेत्र की मतदाता सूची से 804 नाम गायब कर दिए गए हैं, जबकि वे लोग अब भी वहीं रहते हैं। क्योंकि 2600 ऐसे नाम सूची में जोड़े गए हैं, जो उस क्षेत्र के निवासी ही नहीं हैं। बताया गया है कि एक ही विधानसभा क्षेत्र में 16,554 मतदाताओं के नाम को लेकर गड़बड़झाला किया गया है। इस संदर्भ में कांग्रेस ने प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज करा दी है। बेशक यह अवैध और आपराधिक करतूत है, जो मानवीय गलती के कारण हुई या चुनाव आयोग के सॉफ्टवेयर के साथ छेड़छाड़ की गई। जांच-पड़ताल में यह तथ्य भी सामने आया है कि 2022 के विधानसभा चुनाव में 124 सीटों पर करीब 10,00,000 मतों से ही जीत-हार हुई थी। जीतने वाले अधिकांश भाजपा उम्मीदवार थे। यही यह घोटाला न किया जाता, तो चुनाव नतीजे कुछ और ही होते। एक और खोज-खबर सामने आई है कि चुनाव आयोग का इसी आदिनेट पोर्टल मुख्यालय से भी 'ऑन-ऑफ' किया जा रहा है। सभी मतदाता प्रतीककरण अधिकारी (इंआरओ) उसे नहीं देख सकते हैं। सॉफ्टवेयर के जरिए एपिक में देख सकते हैं, उन्हीं के लिए वह सिस्टम 'ऑन' किया जाता है। क्या इस सिस्टम का भी 'केंद्रीकरण' कर दिया गया है और मतदाताओं के नाम मुख्यालय से ही जोड़े-खट कर जाते हैं? 'इंडियन एक्सप्रेस' की खोज-खबर में एक युवा आयुक्त ने इस मुद्दे पर भी सवाल उठाया था। हालांकि वह कोई स्थानना या आरोप नहीं, बल्कि हमारा सवाल है। यदि चुनाव आयोग अपनी लंबी लकीर तोड़े, तो देश के सामने इस सवाल का स्पष्टीकरण भी दे सकता है। यकीनन यह लोकतंत्र-विरोधी, मतदाता-विरोधी साजिश है, जिसके जरिए हरोरज्म व खुलासे सामने आ रहे हैं। उप्र में मार्च-अप्रैल, 2027 में चुनाव होने हैं। यदि विषय के 11 नते, एसआईआर और इसी-सी के खिलाफ सर्वोच्च अदालत में साझा याचिका दायित कर ली जाए, तो 11 नते को 'होकर' चुनाव आयोग के मुख्यालय की जा सकते हैं और सीईसी जानेने कुमारे को भी नते को स्पष्टीकरण के लिए बाध्य कर सकते हैं। अपरचय है कि दोनों चुनाव आयुक्त भी इन तमाम संदर्भों में खामोश हैं। चुनाव आयोग ने उस खोज-खबर का आज तक खंडन नहीं किया और न ही अखबार के खिलाफ माननीय का केस दायर किया। यानी वे खुलासे सच थे ना। उप्र में 27.04 करोड़ मतदाताओं के नाम का दायर गर्प है। बंगाल में 27.16 लाख मतदाताओं को उनके मतदाता सूची से वंचित कर दिया गया था, यह भी सामने आया है।

हॉस्पिटल्स का बड़ा नेटवर्क, रुम रेंट की ज़्यादा सीमा, इलाज का व्यापक कवरेज और कुछ अतिरिक्त लाभ मिल सकते हैं, जो सरकारी योजनाओं में हमेशा उपलब्ध नहीं होते।

प्राइवेट हेल्थ इंश्योरेंस के साथ
अतिरिक्त लाभ..

कई लोगों का लगता है कि हेल्थ इश्योरस का मतलब सिर्फ हॉस्पिटल में भर्ती होने का खर्च कवर होना है। लेकिन सच्चाई यह है कि इलाज के खर्च हॉस्पिटल में भर्ती होने के काफी पहले शुरू हो सकते हैं और डिस्चार्ज होने के बाद भी जारी रह सकते हैं। आज की पॉलिसियों में कई अतिरिक्त लाभ मिल सकते हैं। चेक-अप, ओपीडी कवरेज, टेलीकंसल्टेशन डे-केयर प्रोसीजर, डोमिसिलियरी ट्रीटमेंट होने के बाद के लिए ज्यादा कवरेज, क्रिकिकल आयुष्मान भारत तय शर्तों और सीमाओं के भर्ती होने से जुड़े खर्चों को कवर करता है। इश्योरस आपकी जरूरत के अनुसार स्वास्थ्य का व्यापक कवरेज दे सकता है।

समुक्त कवरेज के साथ स्वास्थ्य सुरक्षा को मजबूत बनाना..

किसी परिवार को आयुष्मान भारत के लिए पात्र होने के बावजूद आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि इलाज का खर्च योजना की कवरेज सीमा से ज्यादा हो सकता है, या इलाज की प्रोसीजर कवरेज से बाहर हो सकती हैं, या लंबे समय तक इलाज और रिकवरी की ज़रूरत पड़ सकती है। ऐसी स्थितियों में प्राइवेट हेल्थ इश्योरेंस आर्थिक सहारे के तौर पर काम करता है और परिवारों को अपनी बचत खर्च करने या कर्ज़ लेने से बचाने में मदद करता है। आयुष्मान भारत और प्राइवेट हेल्थ इश्योरेंस साथ मिलकर बेहतर आर्थिक सुरक्षा देते हैं, जिससे रोज़गार की स्वास्थ्य ज़रूरतों से लेकर गंभीर मेडिकल इमरजेंसी तक, दोनों तरह की परिस्थितियों में सुरक्षा मिलती है। यहां बात आयुष्मान भारत की उपयोगिता को लेकर नहीं है, क्योंकि इसने लाखों भारतीयों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अहम सवाल यह है कि क्या केवल इस योजना की राशि से स्वास्थ्य संबंधी हर तरह की ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं। कवरेज परिवारों के लिए इसका जवाब अब धीरे-धीरे 'नहीं' होता जा रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं के खर्च लगातार बढ़ रहे हैं और इलाज के विकल्प भी पहले से ज्यादा एक्सपेंसिव हो रहे हैं। ऐसे में प्राइवेट हेल्थ इश्योरेंस सरकारी कवरेज के साथ मिलकर एक उपयोगी अतिरिक्त सुरक्षा बन जाती है। आयुष्मान भारत और प्राइवेट हेल्थ इश्योरेंस को एक-दूसरे के विकल्प के बजाय, साथ मिलकर काम करने वाले साधनों के रूप में देखना बेहतर है। दोनों मिलकर परिवारों को ज्यादा व्यापक स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा देने में मदद कर सकते हैं।



Dr. Rami H. Hammad is a male with short dark hair and glasses, wearing a dark suit, white shirt, and striped tie. He is smiling slightly and looking towards the camera.

— અમરનાથ સર્વસેના

चीफ टेक्निकल ऑफिसर - कमांडिंग
बजाज जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड
(पूर्व नाम बजाज आलियांज़ जनरल
इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड)

जॉइंट रिप्लेसमेंट में रोबोटिक्स पर मंथन



अहमदाबाद, 23 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्रभाई पटेल ने शुक्रवार को अहमदाबाद में ‘आईएसीओएन 2026’ का उद्घाटन किया। इंडियन आर्थ्रोप्लास्टी एसोसिएशन की 22वीं वार्षिक कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश के विशेषज्ञ जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी में रोबोटिक्स, नई तकनीकों और बेहतर उपचार पद्धतियों पर चर्चा कर रहे हैं। कॉन्फ्रेंस में 205 राष्ट्रीय और नौ अंतरराष्ट्रीय फैकल्टी सदस्य हिस्सा ले रहे हैं। शैला स्थित ‘द फोरम, सेलिब्रेशन एंड कन्वेंशन’ में आयोजित यह कॉन्फ्रेंस 25 अक्टूबर तक चलेगी।

मुख्यमंत्री भूपेंद्रभाई पटेल ने कहा, मरीजों के लिए दोबारा

चलने-फिरने की क्षमता हासिल करना उनके जीवन में आत्मनिर्भरता और सक्रियता लौटाने जैसा है। मुझे विश्वास है कि इस कॉन्फ्रेंस में साझा किया जाने वाला ज्ञान मरीजों की देखभाल को बेहतर बनाने और सर्जनों की अगली पीढ़ी को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

कॉन्फ्रेंस के साथ आयोजित इंडस्ट्री प्रदर्शनी में इमेज-बेस्ड, इमेजलेस और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित त्रि-आयामी (3डी) रोबोटिक तकनीकों का प्रदर्शन किया जा रहा है। विशेषज्ञ सर्जिकल प्लानिंग और इम्प्लांट की सही स्थिति निर्धारित करने में इन तकनीकों की उपयोगिता पर भी चर्चा कर रहे हैं। कॉन्फ्रेंस के

एलएंडटी फाइनेंस का गोल्ड लोन अभियान लॉन्च

जयपुर, 23 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। देश की अग्रणी खुदरा वित्त कंपनियों में से एक एलएंडटी फाइनेंस लिमिटेड (एलटीएफ) ने जयपुर, राजस्थान में अपने ब्रांड एंबेसडर जसप्रित बुमराह के साथ तीन नए टेलीविजन विज्ञापन (टीवीसी) पेश किए। इन विज्ञापनों के ‘कोई भी सपना होल्ड मत करो, एलएंडटी फाइनेंस गोल्ड लोन करो’ टैगलाइन के साथ लॉन्च किया गया।

इस अभियान के माध्यम से कंपनी अपने गोल्ड लोन उत्पादों के प्रति जागरूकता बढ़ाएगी। इसका उद्देश्य व्यक्तियों, सूक्ष्म उद्यमियों और परिवारों को निष्क्रिय पड़े सोने की कीमत का लाभ उठाकर अपनी विकास संबंधी जरूरतों, आकांक्षाओं और सपनों को पूरा करने में सक्षम बनाना है।

एलएंडटी फाइनेंस लिमिटेड के पूर्णकालिक निदेशक एवं मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) राजू दोदती ने कहा कि कंपनी अपनी ‘लक्ष्य 2031’ रणनीति के तहत जोखिम को प्राथमिकता देने वाली, प्रौद्योगिकी आधारित और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर आधारित खुदरा वित्तीय संस्था में बदलने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रही है।

कंपनी की मुख्य विपणन अधिकारी (सीएमओ) कविता जगतियानी ने कहा कि आज के उपभोक्ता अपनी आकांक्षाओं को पूरा करना चाहते हैं, लेकिन ऋण का उपयोग करते समय लागत और मूल्य के प्रति भी अधिक जागरूक हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि गोल्ड लोन इस स्थिति में उपयुक्त विकल्प है। यह लोगों को पहले से उनके पास मौजूद और भरोसेमंद संपत्ति यानी सोने का उपयोग करके अपने लक्ष्यों को पूरा करने का एक सुरक्षित और स्मार्ट तरीका उपलब्ध कराता है।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

चीनी...

जायसवाल ने कहा, मैं इस बात पर भी जोर देना चाहूंगा कि द्विपक्षीय संबंधों के समग्र विकास के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बनाए रखना बहुत जरूरी है।

3,488 किलोमीटर लंबी है वास्तविक नियंत्रण रेखा गुरुवार को राजस्थान के अलवर में अपने संबोधन के दौरान आईटीबीपी के महानिदेशक ने यह भी कहा कि उनके बल ने अपनी सभी सीमा इकाइयों में ड्रोन प्लाटून गठित किए हैं। इसके अलावा, गलवान जैसी लड़ाइयों से बेहतर ढंग से निपटने के लिए एक नया स्ट्राइक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

उल्लेखनीय है कि भारत-चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसटी) वह सीमा रेखा है, जो उन क्षेत्रों को अलग करती है जहां तक भारत और चीन का वास्तविक नियंत्रण है। भारत के अनुसार, इसकी कुल लंबाई करीब 3,488 किलोमीटर है। हालांकि, चीन इस आंकड़े से सहमत नहीं है और सीमा के कई हिस्सों को लेकर दोनों देशों के बीच मतभेद हैं।

वास्तविक नियंत्रण रेखा को तीन क्षेत्रों में बांटा जाता है। पश्चिमी क्षेत्र में लद्दाख, मध्य क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड तथा पूर्वी क्षेत्र में सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश शामिल हैं।

अरुणाचल प्रदेश में वास्तविक नियंत्रण रेखा की लंबाई करीब 1,126 किलोमीटर मानी जाती है। भारत और चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा का पूरा सीमांकन नहीं हुआ है। इसलिए कई स्थानों पर दोनों देशों की यह धारणा अलग-अलग है कि सीमा कहाँ से गुजरती है। इसी कारण गश्त के दौरान दोनों देशों के सैनिक आमने-सामने आ जाते हैं और टकराव की घटनाएं होती रही हैं। वर्ष 2020 में गलवान संघर्ष के बाद सीमा पर तनाव और सुरक्षा व्यवस्था दोनों देशों के लिए प्रमुख मुद्दे बने हुए हैं।

गलवान संघर्ष के बाद संबंध सुधारने की कोशिशें

वर्ष 2020 में गलवान घाटी में हुई घातक झड़पों और उसके बाद चार साल से अधिक समय तक चले सैन्य टकराव के कारण भारत और चीन के संबंधों में भारी तनाव आ गया था। इस तनाव के बाद दोनों देशों ने संबंधों को फिर से सुधारने के लिए पिछले एक साल से अधिक समय में कई कदम उठाए हैं।

अक्टूबर 2024 में दोनों पक्षों ने पूर्वी लद्दाख के अंतिम दो विवादित क्षेत्रों-डेपसांग और डेमचोक से सैनिकों को पीछे हटाने के लिए एक समझौते को अंतिम रूप दिया था।

इस समझौते के कुछ दिनों बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने रूस के कज़ान शहर में बातचीत की और द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए कई फैसले लिए।

पिछले वर्ष अगस्त में प्रधानमंत्री मोदी वार्षिक शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन के तियानजिन शहर गए थे। वहां सम्मेलन से इतर मोदी और शी जिनपिंग के बीच विस्तृत बातचीत हुई थी।

पिछले महीने नई दिल्ली में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान भी प्रधानमंत्री मोदी ने शी जिनपिंग के साथ द्विपक्षीय बातचीत की।

इस बातचीत में प्रधानमंत्री मोदी ने जोर दिया कि दोनों पक्षों को एक-दूसरे के मुख्य मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता दिखानी चाहिए। उन्होंने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों का आधार तीन आपसी सिद्धांतों पर होना चाहिए-आपसी सम्मान, आपसी संवेदनशीलता और आपसी हित।

पीएम से ...

कांग्रेस ने इस बयान को मुद्दा बनाते हुए सरकार से जवाब मांगा है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोशल मीडिया मंच ‘एक्स’ पर लिखा कि आईटीबीपी के महानिदेशक शत्रुजीत सिंह कपूर के खुलासे के बाद सरकार को तीन प्रमुख मुद्दों पर जवाब देना चाहिए।

राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए खड़गे ने कहा, अरुणाचल प्रदेश में चीनी सेना (पीपुल्स लिबरेशन आर्मी-पीएलए) के साथ लगातार हो रहे टकराव की आईटीबीपी के महानिदेशक द्वारा पुष्टि बेहद चिंताजनक है। डोकलाम और गलवान के बाद क्या एक और गंभीर टकराव की स्थिति बन रही है?

उन्होंने कहा कि अगस्त में तक्सिंग के पास चीन की घुसपैठ की खबरें सामने आई थीं। घटनास्थल से महज

180 किलोमीटर दूर वाचा-दमाई में कोर कमांडर स्तर की बातचीत के 47 दिन बाद भी टकराव जारी है। उन्होंने सवाल किया कि क्या भारत की गश्त करने की पहुंच प्रभावित हुई है? अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है, फिर देश को अंधेरे में क्यों रखा जा रहा है?

चीन से आयात और व्यापार घाटे पर सवाल

आर्थिक सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए खड़गे ने कहा कि गलवान में भारतीय सेना के 20 बहादुर जवानों की शहादत के बाद से वित्त वर्ष 2020-21 में चीन से आयात में 102 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई है, जबकि चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 155 प्रतिशत बढ़कर 112.16 अरब डॉलर तक पहुंच गया है।

उन्होंने कहा कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी माना है कि चीन भारतीय निर्यात में बाधा डालता है। इसके बावजूद सरकार चीनी निवेश पर लगी पाबंदियों में ढील दे रही है और चीन से जुड़ी पात्र कंपनियों को उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) का लाभ देने पर विचार कर रही है।

खड़गे ने सवाल किया, क्या मेक इन इंडिया अब चीन से आयात में बदल गया है?

कूटनीतिक वातांओं के नतीजों पर मांगा जवाब

कांग्रेस अध्यक्ष ने कूटनीतिक जवाबदेही का मुद्दा उठाते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच कम से कम 23 मुलाकातों और बातचीत हो चुकी हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल के साथ विशेष प्रतिनिधियों की 25 दौर की वार्ता, सीमा मामलों पर परामर्श एवं समन्वय के लिए कार्य तंत्र (डब्ल्यूएमसीसी) की 36 बैठकें तथा शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) और ब्रिक्स शिखर सम्मेलनों में लगातार संवाद हुआ है।

खड़गे ने सवाल किया कि इन मुलाकातों और वार्ताओं का ठोस नतीजा क्या निकला? क्या मई 2020 से पहले भारत को प्राप्त गश्त के अधिकार पूरी तरह बहाल हो गए हैं? उन्होंने कहा, हमें अपने सशस्त्र बलों पर पूरा भरोसा है। लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में जवाबदेही जरूरी है, न कि केवल कूटनीतिक मुलाकातों की तस्वीरें और हाफ्लोमेसी खड़गे ने कहा कि विपक्ष पर हमला करने के बजाय प्रधानमंत्री मोदी को संसद और पूरे देश को विश्वास में लेना चाहिए।

बाजार...

के आसपास बनी हुई है। 23 अक्टूबर को ब्रेंट क्रूड ऑयल 116 डॉलर प्रति बैरेल तक पहुंच गया। महंगे तेल से भारत के आयात बिल, महंगाई और कंपनियों की लागत पर दबाव बढ़ सकता है।

2. भू-राजनीतिक तनाव: कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के पीछे भू-राजनीतिक तनाव भी अहम कारण है। ईरान युद्ध के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य का मार्ग लंबे समय से बंद होने और हत्ती विद्रोहियों के सऊदी अरब पर लगातार हमलों के कारण लाल सागर के रास्ते में भी बाधाएं आने की बात कही गई है। इससे वैश्विक तेल आपूर्ति को लेकर चिंता बढ़ी है। वहीं, रूस-यूक्रेन युद्ध भी जारी है।

3. रुपये में कमजोरी: अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत में गिरावट ने भी बाजार पर दबाव बढ़ाया है। जनवरी में एक डॉलर की कीमत करीब 90 रुपये थी, जो अब 95 रुपये के करीब पहुंच गई है। कुछ दिन पहले रुपया 97 रुपये प्रति डॉलर के स्तर तक भी पहुंच गया था। रुपये की कमजोरी से आयात महंगा होने और विदेशी निवेशकों के रिटर्न पर असर पड़ने की आशंका रहती है।

4. विदेशी निवेशकों की निकासी: विदेशी निवेशक भारतीय बाजार से लगातार पैसा निकालकर अमेरिकी और अन्य बाजारों में निवेश कर रहे हैं। इसकी एक वजह भारतीय बाजार की तुलना में अमेरिकी बाजार से बेहतर रिटर्न मिलने की धारणा है। लगातार बिकवाली से घरेलू शेयरों पर दबाव बढ़ा है।

5. अमेरिकी बॉन्ड पर बेहतर रिटर्न: अमेरिकी ट्रेजरी बॉन्ड की प्रतिफल दर (यील्ड) ऊंचे स्तर पर रहने से भी निवेशकों का रुझान प्रभावित हुआ है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, यह दर 5 प्रतिशत से ऊपर बनी हुई है। ऐसे में कुछ निवेशकों को भारतीय शेयर बाजार की तुलना में अमेरिकी बॉन्ड अधिक आकर्षक दिखाई दे रहे हैं।

इस सप्ताह भी बाजार में गिरावट भारतीय शेयर बाजार में इस सप्ताह भी निवेशकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। बाजार में लगातार चार

कारोबारी दिनों तक गिरावट दर्ज की गई। इस दौरान सेन्सेक्स एक सप्ताह में 1,252.15 अंक गिर गया, जबकि निफ्टी में 384 अंकों की कमी आई।

इस गिरावट के कारण निवेशकों की संपत्ति में 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक की कमी आने का अनुमान है। लगातार बिकवाली, कच्चे तेल की ऊंची कीमतों, रुपये की कमजोरी और वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच निवेशकों की नजर अब बाजार की अगली चाल पर टिकी हुई है।

जॉर्डन चर्च में ...

हमले के बाद चर्च के प्रवेश द्वार के पास फर्श पर खून के धब्बे दिखाई दिए। घटनास्थल पर सुरक्षा बलों को तैनात किया गया है और जांच जारी है।

जॉर्डन में ऐसे हमले कम

जॉर्डन में इस तरह के हमले बहुत कम होते हैं, क्योंकि देश को काफी हद तक स्थिर माना जाता है। हालांकि, जॉर्डन के अधिकारियों का कहना है कि हाल के वर्षों में उन्होंने इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा किए गए कई हमलों की कोशिशों को नाकाम किया है।जॉर्डन की कुल आबादी में ईसाइयों की संख्या कम है। इसके बावजूद, देश में बाइबल से जुड़े कई ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल हैं, जो दुनिया भर से ईसाई तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं।

अगस्त तक...

करीबी नजर रखने का निर्देश दिया। शिकायतें प्राप्त करने और उनका तत्काल समाधान सुनिश्चित करने के लिए टोल-फ्री नंबर स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पेयजल संकट सिंचाई के पानी की कमी से भी अधिक गंभीर हो सकता है। बढ़ते तापमान और पानी की किल्लत के कारण लोगों के लिए घरों से बाहर निकलना भी मुश्किल हो सकता है।

रेंवत रेड्डी ने कांग्रेस नेताओं से रायथु वेदिकाओं के माध्यम से किसानों को सूखे की स्थिति के बारे में जागरूक करने और जनजागरूकता के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने की अपील की। सांसद चमाला किरण कुमार रेड्डी को गांधी भवन में हेल्प डेस्क स्थापित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने खरीफ का मौसम सिंचाई संकट के बिना संभाला है और अब किसानों की उपज की खरीद को सुरक्षित एवं सुगम बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि बारिक धान की सात किस्मों पर घोषित बोस से किसानों को लाभ हुआ है। उन्होंने इस योजना की आलोचना करने वाले बीआरएस नेता टी. हरीश राव पर कटाक्ष किया।

रेंवत रेड्डी ने कहा कि दूसरे राज्यों के व्यापारी अग्रिम भुगतान की पेशकश कर रहे हैं और किसानों से 3,400 से 4,000 रुपये प्रति क्विंटल की दर से उपज खरीद रहे हैं।उन्होंने कहा कि ब्रिटेन सहित दुनिया के करीब 100 देशों में महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु जैसे कई राज्यों में सूखे की स्थिति बनी हुई है। महाराष्ट्र में पेयजल की राशनिंग शुरू की गई है और पानी की खपत में 20 प्रतिशत तक कमी लाने के उपाय किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बढ़ते तापमान के कारण बिजली की मांग में भी तेजी से वृद्धि हुई है।

बिजली आपूर्ति के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि विशेषज्ञों ने सालाना बिजली मांग में 6.5 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान लगाया था, लेकिन खपत अप्रत्याशित रूप से 20 प्रतिशत बढ़ गई। उन्होंने कहा कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद सरकार ने 20,000 मेगावाट बिजली की व्यवस्था की है। बाजार में बिजली उपलब्ध नहीं होने के कारण सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, भले ही वह किसी भी कीमत पर बिजली खरीदने के लिए तैयार हो।

उन्होंने जनता से केवल आवश्यक कार्यों के लिए बिजली का इस्तेमाल करने और सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने की अपील की। उन्होंने अपने पैतृक गांव कोणारेड्डीपल्ली का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां परिवारों को सौर ऊर्जा से लाभ मिल रहा है। उन्होंने महिला स्वयं सहायता समूहों को भी सौर ऊर्जा उत्पादन में शामिल करने की बात कही। बिजली परियोजना पर आरोप

रेंवत रेड्डी ने पिछली बीआरएस सरकार की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि 4,000 मेगावाट क्षमता वाले यादद्री ताप विद्युत संयंत्र को दामरचर्ला में स्थापित करने का निर्णय गलत था। उनके अनुसार, इस फैसले से

शनिवार, 24 अक्टूबर, 2026

हैदराबाद

अन्नसेवा मानवता की सच्ची आराधना : सुरेश डालमिया

हैदराबाद। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में शुक्रवार को नामपल्ली स्थित पब्लिक गार्डन के पिलर नंबर 1265-ए के पास नियमित अन्नसेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर समाजसेवी सुरेश डालमिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अन्न-सेवा केवल जरूरतमंदों को भोजन कराने का माध्यम नहीं, बल्कि मानवता के प्रति संवेद-नशीलता, करुणा और समर्पण का प्रतीक है। भूखे व्यक्ति को भोजन कराना सबसे पुनीत कार्यों में से एक है, क्योंकि किसी जरूरतमंद के चेहरे पर संतोष और खुशी लाना ही सच्ची सेवा का सार है।

र्यक्रम में राम प्रकाश



अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, कैलाश चंद केडिया, निर्मला देवी केडिया, भगत राम गोयल, महेश अग्रवाल, भाकराम कुमावत, कमला देवी, मनीष अग्रवाल, रोहित अग्रवाल, सुमन अग्रवाल, संजय गोयल, किरण

गोयल सहित राधे-राधे ग्रुप के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने सेवा के इस पुनीत कार्य में सहभागिता निभाते हुए मानवता, सहयोग और सामाजिक उत्-रदायित्व के संदेशों को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया।

राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में शुक्रवार को इंडो अमेरिकन कैसर होस्पिटल के पास स्थित केबीआर पार्क में नियमित अन्नसेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ग्रुप के सदस्यों ने सेवा और समर्पण की भावना के साथ जरूरतमंदों को अन्नदान कर मानव सेवा का संदेश दिया।इस अवसर पर मनीष अग्रवाल एवं सुभाष अग्रवाल ने सेवा कार्य में सहभागिता निभाई। ग्रुप के सदस्यों ने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा करना केवल सामाजिक दायित्व ही नहीं, बल्कि मानवता के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन भी है।



परियोजना की लागत बढ़ी और इसके पूरा होने में एक दशक की देरी हुई।

मुख्यमंत्री ने दावा किया कि परियोजना पर अतिरिक्त 8,000 करोड़ रुपये खर्च हुए और बिजली उत्पादन की लागत बढ़कर छह रुपये प्रति यूनिट से अधिक हो गई। उन्होंने कहा कि यदि संयंत्र रामागुंडम, कोठागुडेम या मंचेरियल में कोयले के स्रोतों के निकट स्थापित किया गया होता, तो यह 2019 तक पूरा हो सकता था और परिवहन लागत में प्रतिवर्ष 2,000 करोड़ रुपये की बचत होती।

उन्होंने आरोप लगाया कि पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने 50 वर्षों में एक लाख करोड़ रुपये के कथित भ्रष्टाचार के माध्यम से प्रतिमा श्रीनिवास राव को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से इस परियोजना की रूपरेखा तैयार की थी। रेंवत रेड्डी ने कहा कि केंद्रीय मंत्री जी. किरण रेड्डी से चर्चा के बाद अब सरकार महानदी कोलफील्ड्स से कोयला प्राप्त कर रही है। उन्होंने बताया कि जी-9 ग्रेड का कोयला उपलब्ध नहीं होने के कारण संयंत्र को उपलब्ध कोयले की विभिन्न श्रेणियों के आधार पर चलाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने बीआरएस नेताओं पर एल नीनो के कारण कई देशों में उत्पन्न सूखे की स्थिति के बावजूद इसके लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि चंद्रशेखर राव, के.टी. रामा राव और हरीश राव गलत सूचनाएं फैला रहे हैं तथा कांग्रेस नेताओं से इस प्रचार का जवाब देने को कहा।

रेंवत रेड्डी ने कोविड महामारी के दौरान चंद्रशेखर राव की टिप्पणियों का भी जिक्र किया। उन्होंने आरोप लगाया कि चंद्रशेखर राव ने लोगों को धूप में बैठने या क्रोसिन लेने जैसी सलाह देकर गुमराह किया था, जिससे लोगों की मौतों में योगदान हुआ।

मुख्यमंत्री ने पिछली बीआरएस सरकार पर चंद्रशेखर राव के फार्महाउस की ओर पानी मोड़ने और बीआरएस के खातों में 1,500 करोड़ रुपये जमा कराने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इसके विपरीत कांग्रेस सरकार को हर महीने धन जुटाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

उन्होंने आरोप लगाया कि हरीश राव का डेयरी कारोबार निजी अस्पतालों और शैक्षणिक संस्थानों को दूध की आपूर्ति करता था, जबकि जे. संतोष राव के टॉनिक आउटलेट विदेशों से सीधे शराब का आयात करते थे।

मसूद...

समाजवादी पार्टी के सांसद मोहिबुल्लाह नदवी को भी छात्रों से मिलने जाते समय रास्ते में रोककर हिरासत में लिया गया। नदवी ने आरोप लगाया कि दिल्ली पुलिस ने उनके साथ धक्का-मुक्की और बदसलूकी की। उन्होंने कहा कि बारीक धान की सात किस्मों पर घोषित बोस से किसानों को लाभ हुआ है। उन्होंने इस योजना की आलोचना करने वाले बीआरएस नेता टी. हरीश राव पर कटाक्ष किया।

रेंवत रेड्डी ने कहा कि दूसरे राज्यों के व्यापारी अग्रिम भुगतान की पेशकश कर रहे हैं और किसानों से 3,400 से 4,000 रुपये प्रति क्विंटल की दर से उपज खरीद रहे हैं।उन्होंने कहा कि ब्रिटेन सहित दुनिया के करीब 100 देशों में महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु जैसे कई राज्यों में सूखे की स्थिति बनी हुई है। महाराष्ट्र में पेयजल की राशनिंग शुरू की गई है और पानी की खपत में 20 प्रतिशत तक कमी लाने के उपाय किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बढ़ते तापमान के कारण बिजली की मांग में भी तेजी से वृद्धि हुई है।

बिजली आपूर्ति के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि विशेषज्ञों ने सालाना बिजली मांग में 6.5 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान लगाया था, लेकिन खपत अप्रत्याशित रूप से 20 प्रतिशत बढ़ गई। उन्होंने कहा कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद सरकार ने 20,000 मेगावाट बिजली की व्यवस्था की है। बाजार में बिजली उपलब्ध नहीं होने के कारण सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, भले ही वह किसी भी कीमत पर बिजली खरीदने के लिए तैयार हो।

उन्होंने जनता से केवल आवश्यक कार्यों के लिए बिजली का इस्तेमाल करने और सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने की अपील की। उन्होंने अपने पैतृक गांव कोणारेड्डीपल्ली का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां परिवारों को सौर ऊर्जा से लाभ मिल रहा है। उन्होंने महिला स्वयं सहायता समूहों को भी सौर ऊर्जा उत्पादन में शामिल करने की बात कही। बिजली परियोजना पर आरोप

रेंवत रेड्डी ने पिछली बीआरएस सरकार की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि 4,000 मेगावाट क्षमता वाले यादद्री ताप विद्युत संयंत्र को दामरचर्ला में स्थापित करने का निर्णय गलत था। उनके अनुसार, इस फैसले से

मेटा स्मार्ट ...

शुरुआत में उस व्यक्ति ने उनसे कारोबार के बारे में

बातचीत की, लेकिन बाद में चर्चा राजनीति की ओर मुड़ गई। इस दौरान बूथ स्तर की रणनीतियों और राजनीतिक घटनाक्रमों पर भी बातचीत होने लगी।

शिवकुमार के अनुसार, बातचीत का यह रुख और उस व्यक्ति द्वारा पहने गए चश्मे को देखकर उन्हें संदेह हुआ। उन्होंने कहा, मैंने अपने अधिकारियों से उस उद्योगपति की पृष्ठभूमि की जांच करने को कहा।

मुख्यमंत्री के मुताबिक, उन्हें मिली जानकारी से पता चला कि उस व्यक्ति ने केरल के मुख्यमंत्री वी.डी. सतीशन से मुलाकात के दौरान भी वही मेटा स्मार्ट सलास पहना था। हालांकि, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और एक केंद्रीय मंत्री से मुलाकात के दौरान उसने ऐसा चश्मा नहीं पहना था।

शिवकुमार ने दावा किया, उसने यह मेटा चश्मा सिर्फ मेरे और वी.डी. सतीशन के पास आते समय ही पहना था। हालांकि, उन्होंने संबंधित उद्योगपति की पहचान उजागर नहीं की और न ही कथित रिकॉर्डिंग की कोशिश के समर्थन में कोई ठोस सबूत सार्वजनिक किया।

मंत्रियों को सतर्क रहने की सलाह

शिवकुमार ने कहा कि उन्हें उन लोगों के बारे में जानकारी मिली है, जो इस कथित कोशिश में शामिल हो सकते हैं। उन्होंने अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों को भी आगाह किया है कि वे निजी सहायकों, फोन कॉल या अन्य माध्यमों से उन्हें फंसाने की कोशिशों को लेकर सतर्क हैं।

उन्होंने कहा, सरकार एक परिवार की तरह है और इसके मुखिया के तौर पर मुझे अपने कैबिनेट मंत्रियों को सचेत करना होगा, ताकि वे किसी के झांसे में न आएं।

जब उसने पूछा गया कि क्या वह नाम और दस्तावेज सार्वजनिक करने के लिए उचित समय का इंतजार कर रहे हैं, तो मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने रिकॉर्ड सुरक्षित रखे हैं, लेकिन फिलहाल उनका खुलासा नहीं करेंगे। उन्होंने कहा, मैंने उन सभी को बुलाया है और रिकॉर्ड रखा है, अभी नहीं। जब सही समय आएगा, तब मैं अपनी बात कहूंगा। उन्होंने आगे कहा, ‘‘अभी बोलने का समय नहीं है।

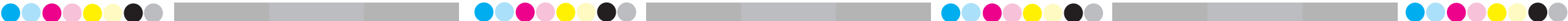
सिद्धारमैया के कथित स्टिंग वीडियो से बढ़ा विवाद

शिवकुमार के ये आरोप ऐसे समय में आए हैं, जब कर्नाटक में पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से जुड़े कथित स्टिंग ऑपरेशन के वीडियो को लेकर राजनीतिक विवाद चल रहा है। इस मामले में सिद्धारमैया की छवि खराब करने की साजिश के आरोप भी लगाए गए हैं। केंद्रीय मंत्री और जनता दल (सेक्युलर) के प्रमुख एच.डी. कुमारस्वामी ने आरोप लगाया कि वर्ष 2011 के वीडियो क्लिप कि उन्हें स्टिंग ऑपरेशन के जरिए फंसाने की कोशिश की जा सकती है।

कर्नाटक से कांग्रेस विधायक रवि कुमार गनिगा ने दावा किया कि एक केंद्रीय मंत्री और राज्य के एक भाजपा नेता ने करीब 10 मंत्रियों तथा मुख्यमंत्री कार्यालय को निशाना बनाने के लिए एक निजी एजेंसी को पैसे दिए थे। उन्होंने एक पेन ड्राइव भी दिखाई, जिसके बारे में उनका दावा था कि उसमें इस संबंध में सबूत मौजूद हैं।जनता दल (सेक्युलर) के नेता कुमारस्वामी ने शिवकुमार पर सिद्धारमैया के खिलाफ कथित स्टिंग ऑपरेशन की साजिश रचने का आरोप लगाया। हालांकि, शिवकुमार ने अपने पूर्ववर्ती सिद्धारमैया को पद से हटाने के लिए ऐसी किसी साजिश में शामिल होने से इनकार किया है। कांग्रेस ने भी विपक्ष के आरोपों को खारिज किया है।

आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं

सार्वजनिक रूप से सामने आई जानकारी से न तो मेटा स्मार्ट ग्लास के जरिए कथित रिकॉर्डिंग की कोशिश की पुष्टि हुई है और न ही किसी व्यापक, सुनियोजित स्टिंग ऑपरेशन के दावों की स्वतंत्र पुष्टि हो पाई है। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि कथित ऑपरेशन किसने करवाए, किन लोगों को निशाना बनाया गया और क्या इनका उद्देश्य कर्नाटक के राजनीतिक नेतृत्व को प्रभावित करना था।



सिम नहीं तो व्हाट्सऐप पर पाबंदी!

नई दिल्ली, 23 अक्टूबर (एजेंसियां)।

मैसेजिंग ऐप व्हाट्सऐप का इस्तेमाल करने वाले उन यूजर्स को जनवरी 2027 से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, जो अपने डिवाइस में रजिस्टर्ड सिम कार्ड रखे बिना ऐप का इस्तेमाल करते हैं। साइबर धोखाधड़ी और भारतीय मोबाइल नंबरों के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से नए सिम-बाइंडिंग नियम लागू किए जाने की तैयारी है।

31 दिसंबर तक का अल्टीमेटम

दूरसंचार विभाग ने मैसेजिंग प्लेटफॉर्म को इन आवश्यकताओं को लागू करने के लिए 31 दिसंबर की समयसीमा निर्धारित की है। प्रस्तावित बदलावों का असर उन यूजर्स पर पड़ सकता है, जो अपना रजिस्टर्ड सिम किसी दूसरे फोन में रखते हैं, अकाउंट बनाने के बाद सिम निकाल देते हैं या मुख्य रूप से वाई-फाई के जरिए मैसेजिंग सेवाओं का इस्तेमाल करते हैं।

व्हाट्सऐप और टेलीग्राम उन प्लेटफॉर्म में शामिल हैं, जिन पर इन आवश्यकताओं के लागू होने की उम्मीद है। दोनों ही सेवाएं अकाउंट के रजिस्ट्रेशन और पहचान के लिए मोबाइल नंबर का इस्तेमाल करती हैं।

क्या है सिम-बाइंडिंग?

सिम-बाइंडिंग एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके तहत मैसेजिंग अकाउंट को उसके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर से जुड़े सक्रिय सिम कार्ड या ई-सिम प्रोफाइल के साथ जोड़ा जाता है।

प्रस्तावित नियमों के तहत मैसेजिंग प्लेटफॉर्म को रजिस्टर्ड नंबर और सक्रिय सिम प्रोफाइल के बीच संबंध की पुष्टि करनी होगी। यदि सिम निकाल दिया जाता है, निष्क्रिय हो जाता है या बदल



दिया जाता है, तो आवश्यक सत्यापन पूरा होने तक यूजर की पहुंच सीमित की जा सकती है।

इस बदलाव से मैसेजिंग ऐप इस्तेमाल करने के कुछ मौजूदा तरीकों में परिवर्तन हो सकता है। खासकर उन लोगों को परेशानी हो सकती है, जो एक फोन पर अकाउंट रजिस्टर करने के बाद मूल सिम उसी फोन में रखे बिना किसी दूसरे डिवाइस पर ऐप चलाते हैं।

हालांकि, इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि प्लेटफॉर्म इन नियमों को किस तरह लागू करते हैं और लिंकड डिवाइस की सुविधा को कैसे संचालित करते हैं।

साइबर ठगी रोकना मकसद

दूरसंचार विभाग की इस पहल का उद्देश्य भारतीय मोबाइल नंबरों के जरिए होने वाले साइबर अपराध, फिशिंग और ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी को रोकना है। विभाग के अनुसार, धोखाधड़ी करने वाले नेटवर्क भारतीय सिम कार्ड का इस्तेमाल मैसेजिंग अकाउंट बनाने और उन्हें देश के बाहर से संचालित करने के

लिए करते रहे हैं।

ऐसे अकाउंट के जरिए लोगों से संपर्क करना, अधिकारियों के रूप में पहचान बताकर धोखा देना, फर्जी लिंक प्रसारित करना और वित्तीय ठगी करना संभव होता है। सिम सत्यापन को मजबूत करने का उद्देश्य सीमापार अपराधिक गतिविधियों में भारतीय मोबाइल नंबरों के दुरुपयोग को कठिन बनाना है।

सरकार ने साइबर धोखाधड़ी के कारण उपभोक्ताओं को होने वाले भारी वित्तीय नुकसान को भी सुरक्षा उपाय मजबूत करने का एक प्रमुख कारण बताया है।

बिना सिम वाले फोन पर क्या होगा?

प्रस्तावित नियमों का यह अर्थ नहीं है कि 1 जनवरी 2027 से विशेष आईफोन या एंड्रॉयड मॉडल पर व्हाट्सऐप चलना बंद हो जाएगा। इन नियमों का मुख्य उद्देश्य फोन के ब्रांड या ऑपरेटिंग सिस्टम के बजाय मैसेजिंग अकाउंट और उसके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर के बीच संबंध सुनिश्चित करना है। जिन यूजर्स के फोन में फिजिकल

सिम कार्ड नहीं लगा है, उन्हें नए नियमों पर विशेष ध्यान देना पड़ सकता है। हालांकि, लिंकड डिवाइस पर व्हाट्सऐप का इस्तेमाल सीमित किया जाएगा या नहीं और किन परिस्थितियों में ऐसा होगा, यह अंतिम क्रियान्वयन व्यवस्था पर निर्भर करेगा।

किन यूजर्स पर पड़ेगा असर?

प्रस्तावित बदलावों का अधिक प्रभाव इन यूजर्स पर पड़ सकता है:

-जो व्हाट्सऐप पर रजिस्टर्ड सिम दूसरे फोन में रखते हैं और ऐप का इस्तेमाल किसी अन्य डिवाइस पर करते हैं।

-जो अकाउंट बनाने के बाद रजिस्टर्ड सिम निकाल देते हैं।

-जो मुख्य रूप से वाई-फाई के जरिए मैसेजिंग ऐप चलाते हैं और नियमित रूप से मोबाइल नेटवर्क का इस्तेमाल नहीं करते।

-जो अपना रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर निष्क्रिय कर देते हैं या बदल लेते हैं, लेकिन जरूरी सत्यापन पूरा नहीं करते। डुअल-सिम फोन इस्तेमाल करने वाले यूजर्स को भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके मैसेजिंग अकाउंट से जुड़ा मोबाइल नंबर सक्रिय रहे और लागू सत्यापन आवश्यकताओं को पूरा करता हो।

ई-सिम वालों को भी ध्यान देना होगा

प्रस्तावित आवश्यकताएं फिजिकल सिम कार्ड के साथ-साथ ई-सिम प्रोफाइल पर भी लागू होने की उम्मीद है। जिन यूजर्स के पास रजिस्टर्ड नंबर से जुड़ी सक्रिय ई-सिम है, उन्हें केवल फिजिकल सिम कार्ड का इस्तेमाल नहीं करने के कारण परेशानी होने की आशंका नहीं है।

मुख्य बात यह होगी कि रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर वैध और सक्रिय सिम प्रोफाइल से जुड़ा हुआ है या नहीं।

टेलीग्राम पर भी असर संभव

टेलीग्राम भी उन प्लेटफॉर्म में शामिल है, जिन पर सिम-बाइंडिंग नियम लागू होने की उम्मीद है, क्योंकि यह अकाउंट रजिस्ट्रेशन के लिए मोबाइल नंबर का इस्तेमाल करता है।

रिपोर्टों के अनुसार, स्नैपचैट पर इन नियमों के लागू होने की उम्मीद नहीं है, जबकि सिग्नल की स्थिति अभी स्पष्ट नहीं है। नियमों का अंतिम दायारा और अलग-अलग प्लेटफॉर्म द्वारा अपनाए जाने वाले सत्यापन के तरीके तय करेंगे कि यूजर्स पर इसका कितना प्रभाव पड़ेगा।

जनवरी से पहले क्या करें?

व्हाट्सऐप यूजर्स को अपना रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर सक्रिय रखना चाहिए और सिम-बाइंडिंग लागू होने के संबंध में व्हाट्सऐप तथा अन्य मैसेजिंग प्लेटफॉर्म की आधिकारिक घोषणाओं पर नजर रखनी चाहिए।

लिंकड डिवाइस का इस्तेमाल करने वाले और वाई-फाई पर निर्भर यूजर्स को अकाउंट सत्यापन तथा ऐप का इस्तेमाल जारी रखने से जुड़े निर्देशों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

31 दिसंबर की अनुपालन समयसीमा नजदीक आने के साथ दूरसंचार विभाग और मैसेजिंग कंपनियों की ओर से मिलने वाला अतिरिक्त स्पष्टीकरण महत्वपूर्ण होगा। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि नए नियम व्यवहार में किस तरह लागू किए जाएंगे और किन यूजर्स को अपनी मौजूदा व्यवस्था में बदलाव करना पड़ सकता है।

गोमांस विवाद पर प्रदर्शन



कोयंबटूर, 23 अक्टूबर (एजेंसियां)।

गोमांस खाने की बात सामने आने के बाद कथित जातिगत भेदभाव और मानसिक उत्पीड़न का सामना करने वाले 16 वर्षीय छात्र की आत्महत्या के मामले में शुक्रवार को उसके परिजनों ने कोयंबटूर जिला कलेक्ट्रेट के बाहर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने संबंधित शिक्षक और प्रधानाध्यापक को गिरफ्तार करने तथा स्कूल की मान्यता रद्द करने की मांग की। मृतक अखिलन कोयंबटूर के अविनाशी रोड स्थित सरकारी सहायता प्राप्त के.के. नायडू हायर सेकेंडरी स्कूल में 11वीं कक्षा का छात्र था। वह पीलीमेडु इलाके का निवासी था।

आरोपों के अनुसार, स्कूल में अन्य छात्र अखिलन से दूरी बना रहे थे। वहीं, एक शिक्षक ने कथित तौर पर उससे गोमांस खाने के बारे में सवाल पूछकर उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। बताया गया है कि इस संबंध में स्कूल के प्रधानाध्यापक से शिकायत भी की गई थी, लेकिन कथित तौर पर कोई कार्रवाई नहीं की गई।

अखिलन ने बुधवार को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इस घटना के विरोध में शुक्रवार को उसके माता-पिता और परिजनों के साथ विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों के 100 से अधिक सदस्य प्रदर्शन में शामिल हुए। इनमें द्रविड़ मुनेत्र कश्गम (डीएमके), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और मई 17 आंदोलन के सदस्य भी शामिल थे। प्रदर्शनकारियों ने छात्र को न्याय दिलाने की मांग करते हुए नारे लगाए। उन्होंने संबंधित शिक्षक और प्रधानाध्यापक की तत्काल गिरफ्तारी तथा स्कूल की मान्यता रद्द करने की मांग की। इसके बाद प्रदर्शनकारी जिला कलेक्ट्रेट के दूसरे गेट से मुख्य प्रवेश द्वार तक मार्च करते हुए पहुंचे। वे जिला कलेक्टर पवन कुमार गिरियापानावर को सीधे ज्ञापन सौंपने के लिए वहां इंतजार करते रहे। प्रदर्शन के कारण कलेक्ट्रेट परिसर में तनावपूर्ण माहौल बन गया। इस बीच, स्कूल प्रबंधन ने घटना के संबंध में कक्षा शिक्षक विजयकुमार और प्रधानाध्यापक अरुणकुमार को निर्लंबित कर दिया है। पीलीमेडु पुलिस ने मामला दर्ज कर छात्र की मौत से जुड़ी परिस्थितियों की जांच शुरू कर दी है। तमिलनाडु राज्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग ने कोयंबटूर शहर के पुलिस आयुक्त को निर्देश दिया है कि मामले में की गई कार्रवाई का विवरण देते हुए एक सप्ताह के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करें। मामले की आगे की जांच जारी है।

निर्यात प्रशिक्षण कार्यक्रम 29 से

हैदराबाद, 23 अक्टूबर

(शुभ लाभ ब्यूरो)।

भारतीय निर्यात संगठन महासंघ (एफआईओ) की ओर से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से 29 और 30 अक्टूबर, 2026 को हैदराबाद में 'निर्यात के अवसर और निर्यात व्यवसाय कैसे शुरू करें' विषय पर दो दिवसीय प्रमाणपत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य इच्छुक उद्यमियों, स्टार्टअप, मौजूदा निर्यातकों और व्यावसायिक पेशेवरों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश करने, निर्यात के अवसरों की पहचान करने और टिकाऊ निर्यात व्यवसाय स्थापित करने के लिए आवश्यक जानकारी एवं व्यावहारिक कौशल प्रदान करना है। यह कार्यक्रम नए प्रतिभागियों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार की प्रक्रियाओं और कार्यप्रणाली की समझ मजबूत करने के इच्छुक अनुभवी पेशेवरों के लिए भी उपयोगी होगा।

निर्यात के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण
कार्यक्रम के सत्रों में निर्यात पंजीकरण प्रक्रिया, विदेश व्यापार नीति, निर्यात प्रोत्साहन योजनाएं, निर्यात वित्त, उत्पाद एवं देश का चयन, अंतरराष्ट्रीय बाजार

अनुसंधान, आईटीसी-एचएस वर्गीकरण तथा संभावित विदेशी खरीदारों की पहचान के लिए नवीन उपकरणों सहित विभिन्न विषयों पर जानकारी दी जाएगी।

प्रतिभागियों को अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक शर्तों (इन्कोटर्म्स), अंतरराष्ट्रीय भुगतान प्रणालियों, लेटर ऑफ क्रेडिट, निर्यात पैकेजिंग एवं लेबलिंग मानकों, मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए), वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की मूलभूत जानकारी एवं रिफंड तथा विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) के तहत निर्यात-आयात संबंधी नियमों की भी जानकारी दी जाएगी।

इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में ऋण जोखिम प्रबंधन, डाक घर निर्यात केंद्रों (डीएनके) एवं इंडिया पोस्ट के माध्यम से निर्यात के अवसर तथा निर्यात संवर्धन परिषदों और एफआईओ की ओर से निर्यातकों को दिए जाने वाले सहयोग पर भी चर्चा होगी।

विशेषज्ञ देंगे महत्वपूर्ण जानकारी

विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ विस्तृत प्रस्तुतियां देंगे और प्रतिभागियों के साथ संवाद करेंगे। विदेश व्यापार महानिदेशालय

(डीजीएफटी), भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम (ईसीजीसी), डाक विभाग, बैंक तथा संबंधित विषयों के विशेषज्ञों को कार्यक्रम में शामिल होने और सत्रों को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया है। इससे प्रतिभागियों को निर्यात कारोबार से जुड़े व्यावहारिक पहलुओं की महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी।

कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा। एफआईओ के संयुक्त महानिदेशक के. उन्नीकृष्णन ने बताया कि इस कार्यक्रम से प्रतिभागियों को निर्यात व्यवसाय शुरू करने की आवश्यकताओं को समझने, नए अंतरराष्ट्रीय बाजारों की संभावनाएं तलाशने, निर्यात संबंधी नियमों के अनुपालन में सुधार करने तथा उपलब्ध सरकारी योजनाओं एवं संस्थागत सहयोग का प्रभावी उपयोग करने में मदद मिलेगी।

संपर्क एवं पंजीकरण:

कार्यक्रम में भाग लेने और अन्य जानकारी के लिए एफआईओ के तेलंगाना चैप्टर के प्रमुख आर. कुलकर्णी से मोबाइल नंबर 9848286640 पर संपर्क किया जा सकता है। ई-मेल: kulkarnifeo.org।

जटिल परिस्थितियों में सफल प्रसव

पेढापल्ली, 23 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। पेढापल्ली जिला अस्पताल में चिकित्सकों ने गंभीर स्वास्थ्य जटिलताओं से जूझ रही 30 वर्षीय गर्भवती महिला का सफल शल्य प्रसव कराया। जुलापल्ली गांव की निवासी महिला के गर्भाशय में एम्पनियोटिक द्रव की कमी, भ्रूण द्वारा मल त्याग, पिछले चार महीनों से उच्च रक्तचाप तथा लगभग 10 सेंटीमीटर का फाइब्रोइड पाया गया था। अस्पताल अधीक्षक डॉ. के. शीघर के नेतृत्व में चिकित्सकों ने सावधानीपूर्वक ऑपरेशन किया। फिलहाल मां और बच्चा दोनों सुरक्षित हैं। अधीक्षक ने स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रावलिका, एनेस्थीसिया विशेषज्ञ डॉ. कृष्णावेनी तथा नर्सिंग एवं ऑपरेशन थिएटर स्टाफ की सराहना की। उन्होंने बताया कि जिला अस्पताल में लैप्रोस्कोपिक सर्जरी, लेजर उपचार, मूत्रविज्ञान सर्जरी और अन्य उन्नत चिकित्सा सेवाएं नि:शुल्क उपलब्ध हैं तथा लोगों से इनका लाभ उठाने की अपील की।

रेडक्रॉस की नई समिति ने कलेक्टर से की मुलाकात



पेढापल्ली, 23 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी, पेढापल्ली जिले की नवनिर्वाचित कार्यकारी समिति के सदस्यों ने शुक्रवार को जिला कलेक्टर कोया शीघर्ष से मुलाकात कर सेवा कार्यक्रमों पर चर्चा की। कलेक्टर ने रक्तदान शिबिर आयोजित करने, आपात स्थिति में रक्त उपलब्ध कराने, स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने तथा जरूरतमंदों की सहायता के लिए जिलेभर में रेडक्रॉस की सेवाओं का विस्तार करने का सुझाव दिया। इस अवसर पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष एराबती वेंकटेश्वर राव, उपाध्यक्ष सादुला वेंकटेश्वरलू, कोषाध्यक्ष पम्पाती श्रीकांत, राज्य प्रबंध समिति सदस्य कवेती राजगोपाल तथा जिला समिति सदस्य डीवीएस मूर्ति, गुल्ला अंजन कुमार, वेलपुला रमेश और वेलपुरी संपत राव सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

मैसूर, 23 अक्टूबर (शुभ

लाभ ब्यूरो)। स्थानकवासी जैन संघ, हल्लदेकरी के तत्वावधान में जैन स्थानक भवन में आयोजित धर्मसभा में कमल मुनि कमलेश ने आईबिल ओली एवं साधना विषय पर प्रवचन देते हुए कहा कि किसी भी धर्म की जाजम पर विवाद का कोई स्थान नहीं है। विवाद अपने आप में हिंसा, अपराध और पाप की जननी है। यह अशांति, तनाव और टकराव का मूल कारण बनता है। विवाद से कभी विवाद शांत नहीं होता, बल्कि ऐसा प्रयास आग में घी डालने के समान है।

मुनि ने कहा कि विवादों को समाप्त करने का सबसे प्रभावी माध्यम संवाद है, जिसकी शुरुआत सद्भावना से होती है। संवाद के जरिए विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। संवाद में हार-जीत की भावना अथवा किसी की नीचा दिखाने का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। इसके लिए व्यक्ति



को शर्तों, पूर्वाग्रहों और हठधर्मिता से मुक्त होकर आगे आना चाहिए। समझने और समझाने की भावना ही सार्थक संवाद की पहचान है।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार दही का मंथन करने से मक्खन प्राप्त होता है, उसी प्रकार महापुरुषों के सार्थक संवाद से जीवन जीने की कला और समस्याओं के समाधान प्राप्त होते हैं। संवाद को जानबूझकर विवाद में बदलने वाला व्यक्ति अत्यंत निकाचित कर्मों का बंधन करता है। तर्क-वितर्क और कुतर्क के

माध्यम से विवादों को अनावश्यक रूप से लंबा खींचना समय और शक्ति की बर्बादी है। ऐसा व्यक्ति स्वयं ही विवादों के दलदल में फंस जाता है और उसके लिए धर्म आराधना तथा साधना के मार्ग पर आगे बढ़ना कठिन हो जाता है।

मुनि ने श्रद्धालुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में शांति, सद्भावना और सहनशीलता को महत्व देना चाहिए। मतभेद होने पर भी संवाद का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। अहंकार और हठ को

त्यागकर एक-दूसरे की बात समझने का प्रयास करने से परिवार, समाज और विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है।

धर्मसभा के दौरान अंतरराष्ट्रीय जैन दिवाकर विचार मंच के मंत्री निर्मल कुमार जैन (दिल्ली), सविता जैन और सारिका जैन के प्रतिनिधिमंडल ने कमल मुनि कमलेश से दिल्ली में चातुर्मास करने की विनती की। इस अवसर पर संघ की ओर से प्रतिनिधिमंडल का अभिनंदन किया गया।

धर्मसभा में मदनलाल दरला, सोहनलाल बाघमार, मोहनलाल सेठिया, केशवचंद बोहरा, तेजराज नंगावत, भिकमचंद बाफणा, मोहनलाल कोठारी, गुदुडमल खाबिया, शांतिलाल लोढ़ा सहित अनेक शावक उपस्थित रहे। संघ के सचिव बुधमल बाघमार ने कार्यक्रम का संचालन किया।

गांजे के साथ हथियार बरामद



हैदराबाद, 23 अक्टूबर (शुभ लाभ ब्यूरो)।

हैदराबाद के अट्टापुर में गांजे की तस्करी के खिलाफ आबकारी विभाग की छापेमारी के दौरान शुक्रवार को चौकाने वाला मामला सामने आया। अधिकारियों ने एक युवक के पास से करीब 1.5 किलोग्राम सूखा गांजा, एक बंदूक, एक पिस्तौल और पांच कारतूस बरामद किए।

आबकारी उपायुक्त ए. शीनिवास रेड्डी ने बताया कि राजेंद्रनगर पुलिस थाना क्षेत्र के सिख चोनी इलाके में तलाशी के दौरान आरोपी सरदार राजा सिंह रणजीत सिंह को पकड़ा गया। गांजे के साथ दो हथियार और कारतूस मिलने के बाद अधिकारियों ने हथियारों और गोला-बारूद के स्रोत का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है।

मंगलहाट से गांजा खरीदने का दावा

शीनिवास रेड्डी के अनुसार, विश्वसनीय सूचना के आधार पर आबकारी अधिकारियों ने शुक्रवार को